केरल पाठावली

हिंदी

कक्षा VIII

Standard - 8

Kerala Reader

HINDI

केरल सरकार
शिक्षा विभाग
2025
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
केरल, तिरुवनंतपुरम

राष्ट्रगान

जनगण-मन अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब-सिंध-गुजरात-मराठा,
द्राविड़-उत्कल-बंगा
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा,
उच्छल जलधि तरंगा,
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जय-गाथा
जनगण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे
जय जय जय, जय हे।

प्रतिज्ञा

भारत हमारा देश है। हम सब भारतवासी भाई-बहन हैं। हमें अपना देश प्राणों से भी प्यारा है। इसकी समृद्धि और विविध संस्कृति पर हमें गर्व है। हम इसके सुयोग्य अधिकारी बनने का प्रयत्न सदा करते रहेंगे। हम अपने माता-पिता, शिक्षकों और गुरुजनों का आदर करेंगे और सबके साथ शिष्टता का व्यवहार करेंगे। हम अपने देश और देशवासियों के प्रति वफ़ादार रहने की प्रतिज्ञा करते हैं। उनके कल्याण और समृद्धि में ही हमारा सुख निहित है।

Prepared by
State Council of Educational Research and Training(SCERT)
Poojappura, Thiruvananthapuram 695012, Kerala
Website : www.scertkerala.gov.in, e-mail : scertkerala@gmail.com
Phone : 0471-2341883, Fax : 0471-2341869
Typeset and design by : SCERT, First Edition : 2025
Printed at : KBPS, Kakkanad, Kochi-30
Department of General Education, Government of Kerala

प्रिय दोस्तो,

हिंदी भाषार्जन का सिलसिला केरल पाठ्यचर्या नवीकरण 2023 के पंखों में विस्तार पा रहा है। यह हिंदी भाषा को एक जीवंत माध्यम के रूप में सीखने का अवसर प्रदान करता है। समाज को जानने-पहचानने तथा उसे वांछित मोड़ देने की आपकी क्षमता को ध्यान में रखकर आठवीं कक्षा की यह पाठ्यपुस्तक तैयार की गई है।

यह पाठ्यपुस्तक गतिविधि-आधारित शिक्षण पर बल देती है। आपको मिल-जुलकर सीखने, विचारों का आदान-प्रदान करने तथा एक दूसरे को समझने का मौका मिलना है, यही हमारी अपेक्षा है। इससे उम्मीद है, आपमें हिंदी भाषा के प्रति रुचि पैदा हो जाए, आपके भाषाई कौशलों का विकास हो, आप संतुलित सफल जीवन जीने लायक बनें। आशा है, यह पाठ्यपुस्तक आपको ज्ञानवर्धक लगे...रुचिकर भी लगे।

डॉ. जयप्रकाश. आर. के
निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं
प्रशिक्षण परिषद्, केरल

HINDI - CLASS - VIII
TEXTBOOK DEVELOPMENT TEAM

ADVISOR

Prof.(Dr).S.R JAYASREE — Professor & Head, Department of Hindi
University of Kerala, Thiruvananthapuram

CHAIRPERSON

Prof.(Dr).S THANKAMONI AMMA — Professor & Head (Rtd), Department of Hindi
University of Kerala,Thiruvananthapuram

EXPERTS

Prof.(Dr).N SURESH — Professor of Hindi (Rtd), Department of Hindi
University of Kerala,Thiruvananthapuram

Dr. P LETHA — Associate Professor & Head (Rtd),
Govt College for women, Thiruvananthapuram

PARTICIPANTS

MANOJKUMAR P	District Programme Officer, SSK Malappuram
SIVAPRASAD M R	Block Project Co-ordinator, BRC Palakkad
Dr BICHU K L	Trainer, URC South, Thiruvananthapuram
SUDHEER J	HST Hindi, JFKM VHSS Karunagappally, Kollam
SREELATHA B M	Instructor, Govt RILT, PMG,Thiruvananthapuram
Dr MINI P	HST Hindi, Govt Boys HSS Kayamkulam
JASMINE S	HST Hindi, GVHSS For Girls, Pettah,Thiruvananthapuram
SIJI SIVAN	HST Hindi, SDVGHS, Alappuzha
RAJENDRAN C	Art teacher (Rtd) Govt HSS Ochira, Alappuzha
BALAKRISHNAN KADIRUR	Art Teacher (Rtd),GHSS Muppathadam, EKM
BAIJU DEV	Art teacher (Rtd), PMGHSS Palakkad
ELAN SHA	Ektara, Bhopal

ACADEMIC CO-ORDINATOR

DEEPA N KUMAR

Research Officer,Hindi,SCERT Kerala,Thiruvananthapuram

State Council of Educational Research and Training,Kerala
(SCERT)

अनुक्रमणिका

इकाई 1 — पत्ते-पत्ते

शीर्षक	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
पेड़	कविता	सुशील शुक्ल	8
जूलिया और लूना	कहानी	नेहा सिंह	14

इकाई 2 — पलते रिश्ते

शीर्षक	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
हाची की कहानी	कहानी	गीत चतुर्वेदी	24
बाबा और बाबा की छड़ी	कविता	गुलज़ार	35

इकाई 3 — खुलते नज़ारे

शीर्षक	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
जब हम धीरे चलते हैं	यात्रा विवरण	एलन शॉ	43
बाइसिकल थीव्स	फ़िल्मी लेख	वरुण ग्रोवर	54
मेरी माँ	फ़िल्मी गीत	प्रसून जोशी	60

इकाई 4 — साथ चलें

शीर्षक	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
सयानी बुआ	कहानी	मन्नू भंडारी	65
चौक	कविता	आलोक धन्वा	74

इकाई 5 — गुज़रते पल

शीर्षक	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
खुशबू रचते हैं हाथ	कविता	अरुण कमल	80
सीरिया की बेटी	संस्मरण	मैत्रेयी कुलकर्णी	86

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय**,

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता**,

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और [2][राष्ट्र की एकता

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़ संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3-1-1977 से) "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3-1-1977 से) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

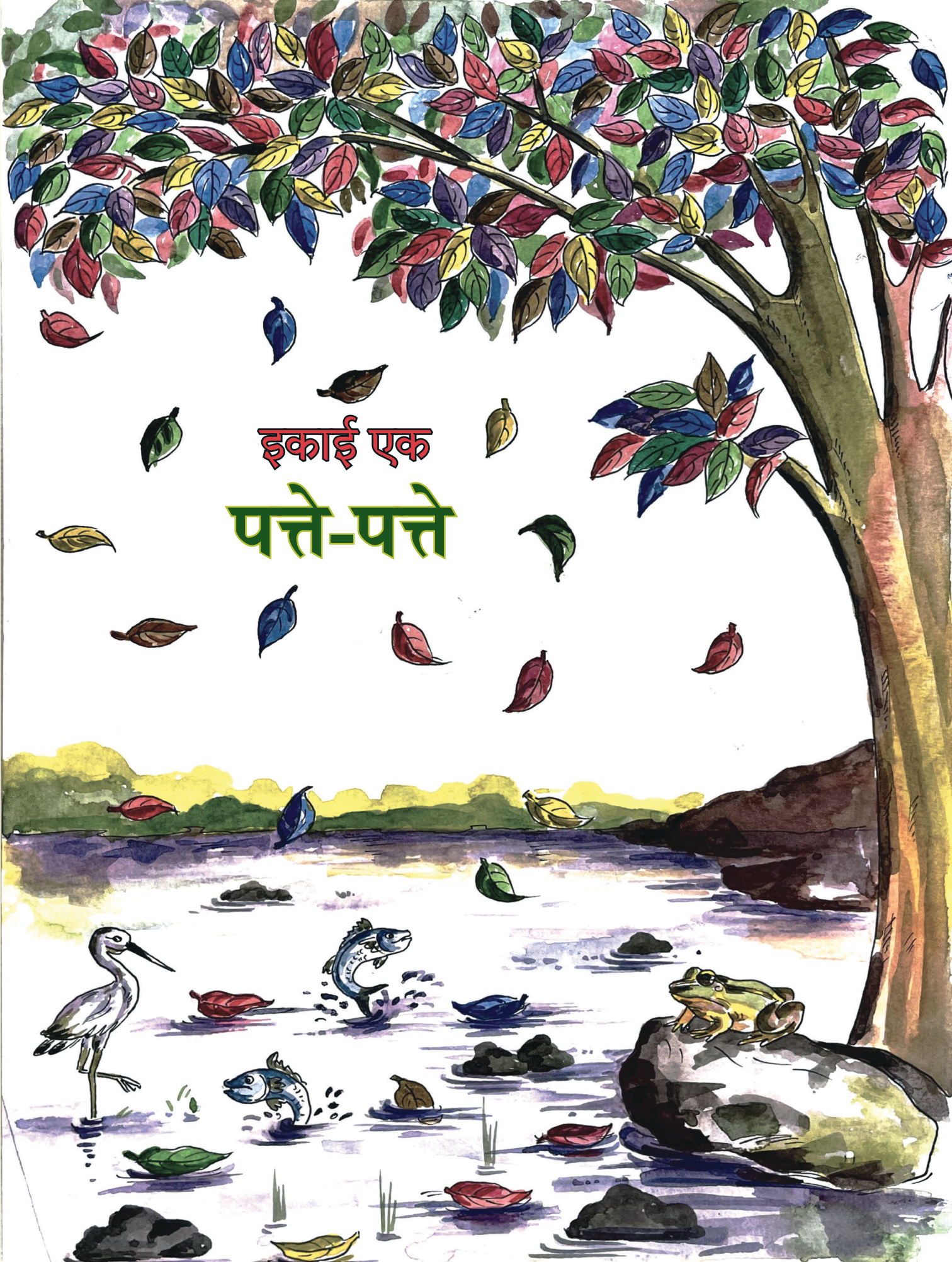
इकाई एक
पत्ते-पत्ते

कविता

पेड़

सुशील शुक्ल

पेड़ तुम पेड़ नहीं
तुम दर्जी

तुमने कितने सिले घोंसले
कितनी सिलीं हवाएँ
धूप सिली तो बिखर गईं
कतरन-कतरन छायाएँ

पेड़ तुम पेड़ नहीं
तुम दर्जी

'धूप सिली तो बिखर गईं
कतरन-कतरन छायाएँ'
- इससे क्या दृश्य उभर आता है?

मिट्टी सिलकर रंग बनाए
पानी सिल आकाश
मिट्टी रंग हवा पानी को
जोड़ा दिया तराश

पेड़ तुम पेड़ नहीं
तुम दर्जी

तुमने कितने सिले किनारे
कितनी सिलीं ज़मीनें
रंग महक की हुई सिलाई
फूल सिले पशमीने

पेड़ तुम पेड़ नहीं
तुम दर्जी

आम में आम के स्वाद सिले हैं
जामुन में जामुन के
बाग में बाग के स्वाद सिले हैं
वन के पेड़ में वन के

पेड़ तुम पेड़ नहीं
तुम दर्जी

‘ मिट्टी रंग हवा पानी को
जोड़ा दिया तराश ’
- इसका तात्पर्य क्या है ?

‘रंग महक की हुई सिलाई’
-इसका मतलब क्या है ?

‘वन के पेड़ में वन के
स्वाद सिले हैं।’
- का मतलब क्या है ?

आप अपनी ज़िंदगी को कैसे सिलना चाहते हैं?

आगे...

- **कविता में पेड़ किन-किन को सिलता है ? चुनकर नीचे लिखें।**

घर	घोंसले	कपड़े
हवाएँ	बादल	धूप
सागर	चाँद	किनारे
रात	ज़मीनें	सपना
फूल	किताब	तिनका

* धूप
* .....
* .....
* .....
* .....
* .....
* .....

संबंध पहचानें और जोड़े बनाएँ।

धूप	-	.....	पशमीने
मिट्टी	-	.....	छाया
पानी	-	.....	रंग
फूल	-	.....	आकाश

कविता से ये आशय वाली पंक्तियाँ चुनकर लिखें।

- धूप के सिलने से छायाएँ बिखर गई हैं।
- पेड़ ने रंग और सुगंध की सिलाई की ।
- पेड़ ने मिट्टी, रंग, हवा और पानी को तराशके जोड़ा है।
- पेड़ ने प्रत्येक फल में अपना स्वाद भरा है।

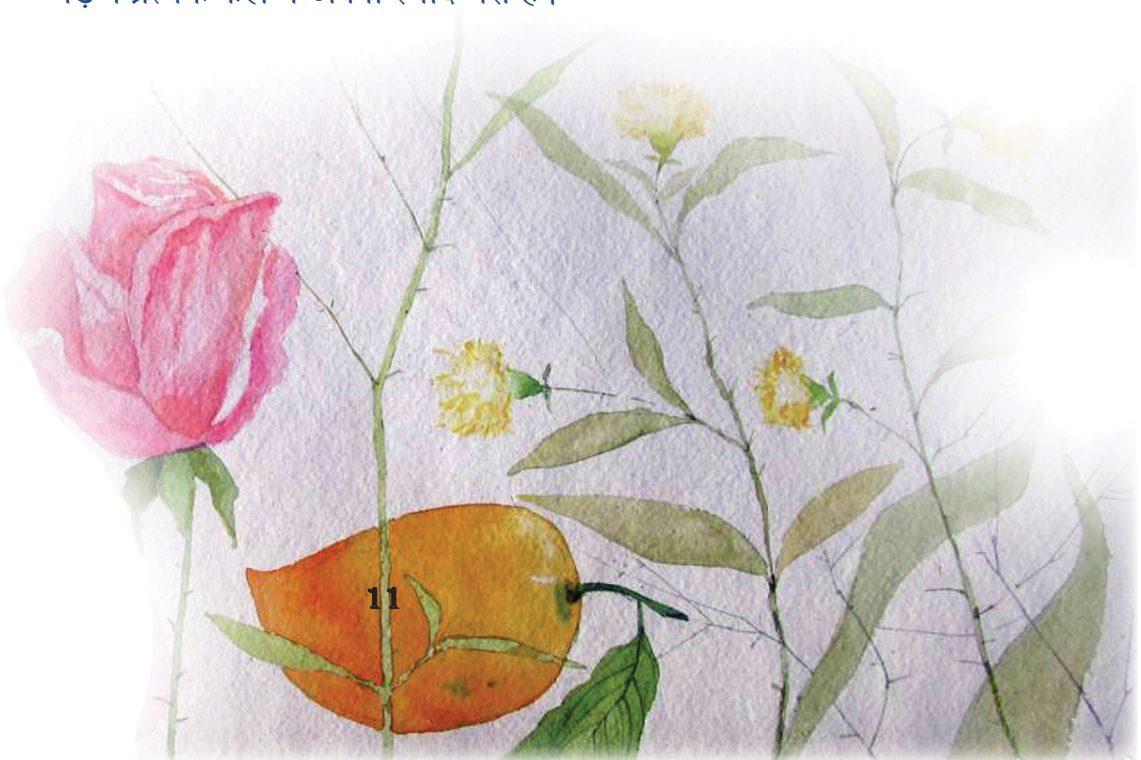

शब्दों का आपसी संबंध पहचानें। 'सिले' या 'सिलीं' से पूरा करें।

सिले घोंसले	..... पत्ते
सिलीं हवाएँ	..... कलियाँ
सिले किनारे	..... नदियाँ
सिलीं ज़मीनें	..... डालियाँ

सिले
सिलीं

- पेड़ को दर्जी क्यों कहा गया है ?
  चर्चा चलाएँ।
  - कविता का आशय लिखें।

- कविता आपको कैसे लगी ?
  -अपना मत प्रकट करते हुए कवि के नाम पत्र लिखें।

अनुबद्ध कार्य

कविता का आलाप और दृश्याभास करें।

मदद लें..

दर्जी - തയ്യൽക്കാരൻ, tailor, தையற்காரன், ಟೈಲರ್

घोंसला - नीड़

धूप - सूरज की किरणों का विस्तार

बिखर गई - ചിതറി, scattered, சிதறியது, ಹರಡಿತು

कतरन - കഷണങ്ങൾ, pieces, துண்டு, ತುಂಡುಗಳು

तराश - രൂപപ്പെടുത്തൽ, carving, உருவாக்குதல், ಕೆತ್ತನೆ ಮಾಡು

जोड़ा दिया
तराश - काटकर जोड़ दिया।

महक - सुगंध

पशमीने - മൃദുവായ കമ്പിളി വസ്ത്രങ്ങൾ, very soft woollen clothes, கம்பிளி, ಕಂಬಳಿ

❄

सुशील शुक्ल

सुशील शुक्ल का जन्म 25 मार्च 1974 में मध्यप्रदेश के होशंगाबाद में हुआ। आप बाल साहित्य के क्षेत्र में लगभग ढाई दशकों से काम कर रहे हैं। आप ' प्लूटो ' और ' साइकिल ' बाल पत्रिकाओं के संपादक भी हैं। आप ' चकमक ' बाल पत्रिका के संपादक रहे थे। 'ये सारे उजाला सूरज का', 'टिफिन दोस्त', 'फेरीवाले' सहित आपकी बारह बाल पुस्तकों का प्रकाशन 'एकलव्य प्रकाशन' ने किया। 2024 के हरिकृष्ण देवसरे बालसाहित्य पुरस्कार से वे सम्मानित हैं।

कहानी

जूलिया और लूना

नेहा सिंह

एक रोज़ कुछ हट्टे-कट्टे आदमी एक बड़े-से पेड़ को काटने पहुँचे। एक लड़की ने उन्हें देख लिया। वह झट पेड़ पर चढ़ गई। आदमियों ने पहले उसे समझाया, फिर धमकाया, बहोत डराया। " मैं नहीं उतरूँगी।" लड़की चिल्लाई और एक शाखा पर जा बैठी। आदमियों ने सोचा, "आखिर कभी तो उतरेगी। तब काटेंगे पेड़ को।" दिन, हफ्ते, महीने बीत गए। पर लड़की तो उतरी ही नहीं। लोगों को जब पता चला तो उसके

'मैं नहीं उतरूँगी' -लड़की के इस निर्णय पर आपका विचार क्या है?

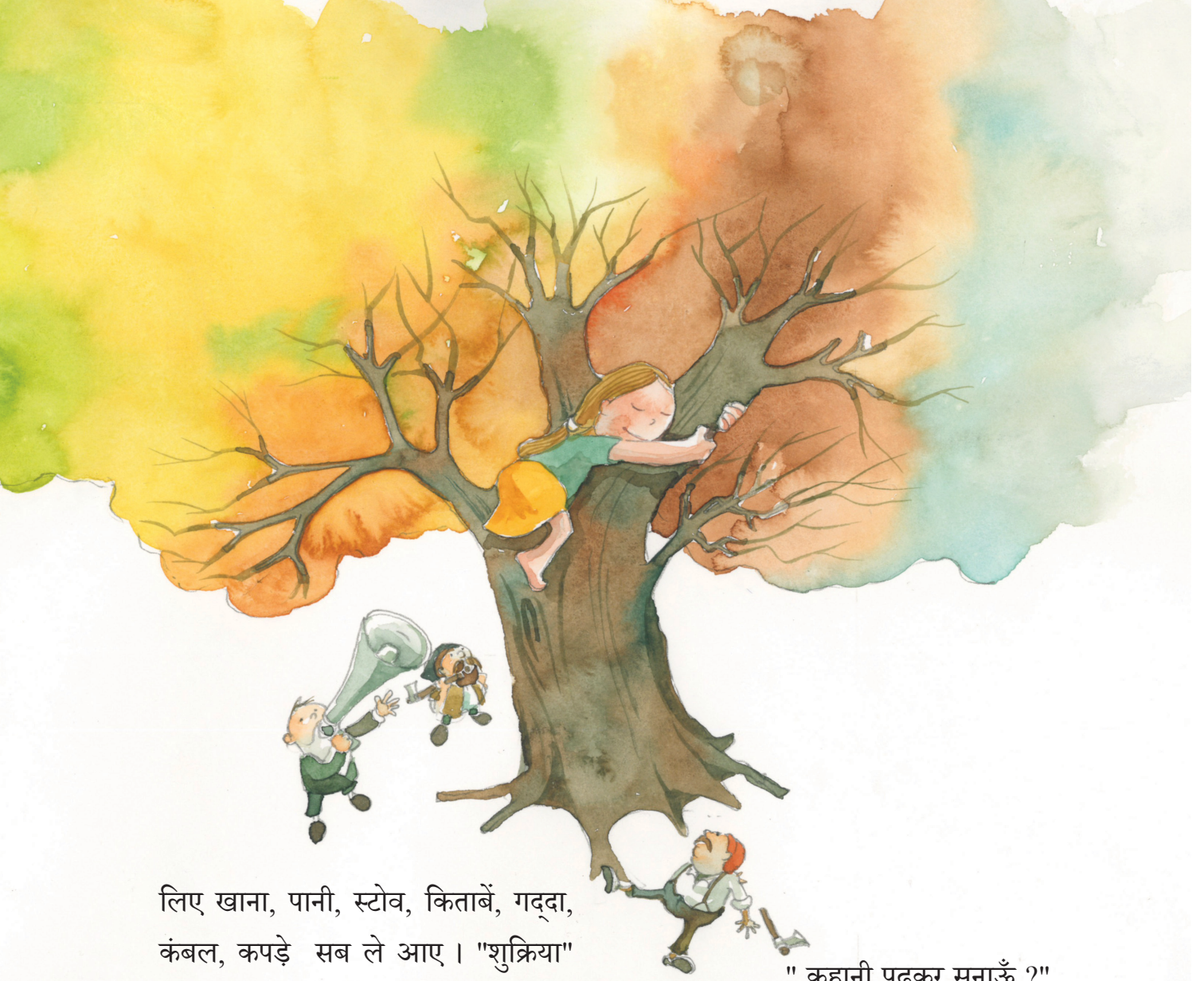

लिए खाना, पानी, स्टोव, किताबें, गद्दा, कंबल, कपड़े सब ले आए। "शुक्रिया" लड़की चहचहाई। उसने चिड़ियों की तरह पेड़ पर अपना घोंसला बना लिया।

'लड़की चहचहाई।'- यहाँ 'चहचहाई' शब्द का प्रयोग क्यों किया होगा?

बारिश आई, सर्दी आई, भयंकर आँधी-तूफ़ान आए, बर्फ़ पड़ी। पर पेड़ ने लड़की को बचाए रखा और लड़की ने पेड़ को।

" कहानी पढ़कर सुनाऊँ ?"

कभी लड़की पेड़ से पूछती तो कभी पेड़ लड़की को अपने पत्तों से हवा का बहता राग सुनाता। हट्टे-कट्टे आदमियों के सेठ ने अजीबोगरीब तरकीबें लगाईं- कभी पेड़ के नीचे लाउडस्पीकर पर तेज़ शोर मचाया, कभी पेड़ के ऊपर हेलिकॉप्टर उड़ा-उड़ाकर लड़की को रात-रात भर जगाए रखा। "तुम हमारी दोस्ती कभी नहीं तोड़ पाओगे।" लड़की बुलंद आवाज़ में उन्हें कहती।

उनकी अनोखी दोस्ती का किस्सा दुनिया भर में मशहूर हो गया। उनके इर्द-गिर्द हज़ारों लोग इकट्ठा होने लगे। हट्टे-कट्टे आदमियों और उनके सेठ को लड़की, पेड़, उनकी दोस्ती और उनके हज़ारों दोस्तों से डर लगने लगा था।

738 दिनों तक पेड़ काटने का इंतज़ार करने के बाद एक दिन वे आदमी चुपचाप वहाँ से जाने लगे। " वादा करो यहाँ के किसी भी पेड़ को कभी नहीं काटोगे ।" लड़की ने सेठ से वादा ले लिया। सारे पेड़ बच गए। उस लड़की का नाम जूलिया है, उस पेड़ का नाम है लूना। दोनों आज भी पक्के दोस्त हैं।

"738 दिनों तक पेड़ काटने का इंतज़ार करने के बाद एक दिन वे आदमी चुपचाप वहाँ से जाने लगे।" - इसपर आपका विचार क्या है ?

जूलिया लोरेन हिल

जूलिया लोरेन हिल का जन्म 18 फरवरी 1974 को मिसोरी के माउण्ट वेरनोन (यू.एस) में हुआ। आप जूलिया बटरफ्लाई हिल के नाम से जानी जाती हैं। आप एक सफल लेखिका, अमेरिकी पर्यावरण कार्यकर्त्री और प्रेरक वक्ता हैं। आप जंगलों-पेड़ों की कटाई रोकने के लिए 10 दिसंबर 1997 और 18 दिसंबर 1999 के बीच 738 दिन 200 फुट (61 मीटर) ऊँचे, लगभग 1,000 साल पुराने कैलिफोर्निया रेडवुड पेड़ में रहीं । जूलिया पेड़ के शीर्ष के पास एक तंबू में रही थीं, ताकि पैसिफिक लंबर कंपनी के लकड़हारे इसे काट न सकें। वे अंततः पेड़ को बचाने के लिए लंबर कंपनी के साथ एक समझौते पर पहुँचीं। वह पेड़ प्यार से लूना के नाम से जाना जाता था । जूलिया ने सन् 2000 में अपने पेड़ पर बैठने के अनुभव के बारे में एक किताब प्रकाशित की, नाम है- " द लिगेसी ऑफ लूना "।

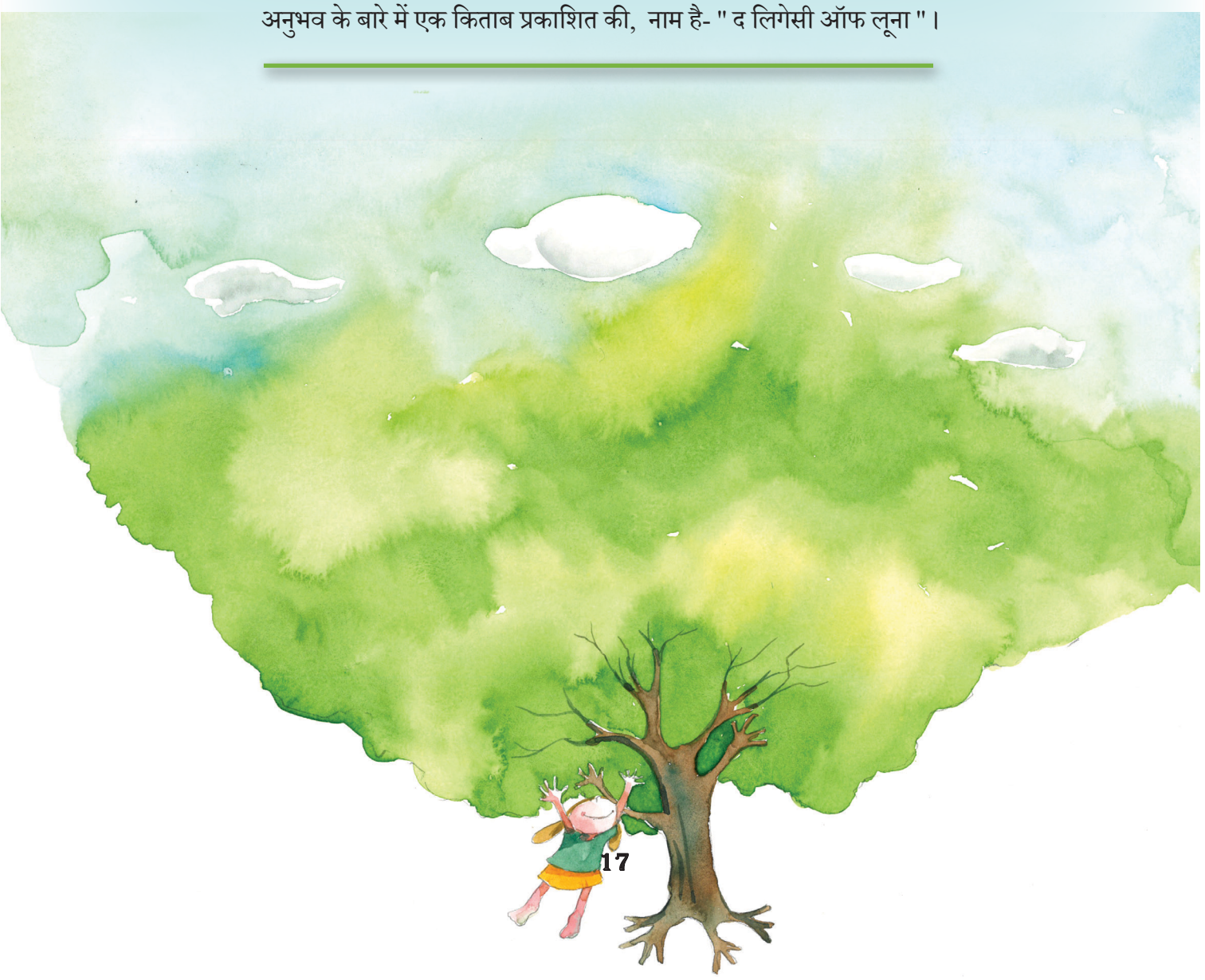

आगे...

कहानी के आधार पर सही प्रस्ताव चुनकर लिखें।

- लड़की ने चुनौतियों का सामना किया।
- लड़की ने विपत्ति में पेड़ को छोड़ दिया।
- लड़की ने जीवन की सुविधाएँ छोड़ दीं।
- लड़की सेठ के अजीबोगरीब तरकीबों से डर गई।
- लड़की अपनी दोस्ती पर अटल रही।

नमूने के अनुसार वाक्यों का पुनर्लेखन करें।

" मैं नहीं उतरूँगी"। लड़की चिल्लाई।

लड़की चिल्लाई **कि** मैं नहीं उतरूँगी।

- आदमियों ने सोचा, "आखिर कभी तो उतरेगी। तब काटेंगे पेड़ को।"
- " कहानी पढ़कर सुनाऊँ ?" कभी लड़की पेड़ से पूछती।
- "तुम हमारी दोस्ती कभी नहीं तोड़ पाओगे।" लड़की ने कहा।
- लड़की ने बताया, " वादा करो यहाँ के किसी भी पेड़ को कभी नहीं काटोगे।"

तैयार करें।

जूलिया और लूना की अनोखी दोस्ती का किस्सा दुनिया भर में मशहूर हो गया। कहीं-कहीं लूना के संरक्षण पर पोस्टर निकलने लगे।

- आप भी लूना के संरक्षण पर पोस्टर तैयार करें।

लिखें...

738 दिनों तक पेड़ काटने का इंतज़ार करने के बाद एक दिन वे आदमी चुपचाप वहाँ से जाने लगे।" वादा करो यहाँ के किसी भी पेड़ को कभी नहीं काटोगे।" लड़की ने सेठ से वादा ले लिया।

- इस प्रसंग पर जूलिया और सेठ के बीच की बातचीत तैयार करें।

कहानी की घटनाओं को क्रम से लिखें।

- एक रोज़ कुछ हट्टे-कट्टे आदमी एक बड़े-से पेड़ को काटने पहुँचे।
- लड़की और पेड़ के इर्द-गिर्द हज़ारों लोग इकट्ठा होने लगे।
- कई दिनों तक पेड़ काटने का इंतज़ार करने के बाद एक दिन वे आदमी चुपचाप वहाँ से जाने लगे।
- हट्टे-कट्टे आदमियों के सेठ ने अजीबोगरीब तरकीबें लगाईं।
- लड़की ने चिड़ियों की तरह पेड़ पर अपना घोंसला बना लिया।
- लड़की झट पेड़ पर चढ़ गई।

अनुबद्ध कार्य

देश का विकास और प्रकृति-संरक्षण विषय पर चर्चा चलाएँ और लघु लेख तैयार करें।

जून और जुलाई महीनों के विशेष दिवसों को पहचानें। नमूने के अनुसार कम से कम पाँच दिवसों की सूची बनाएँ।

- **पाँच जून - विश्व पर्यावरण दिवस**
-
-

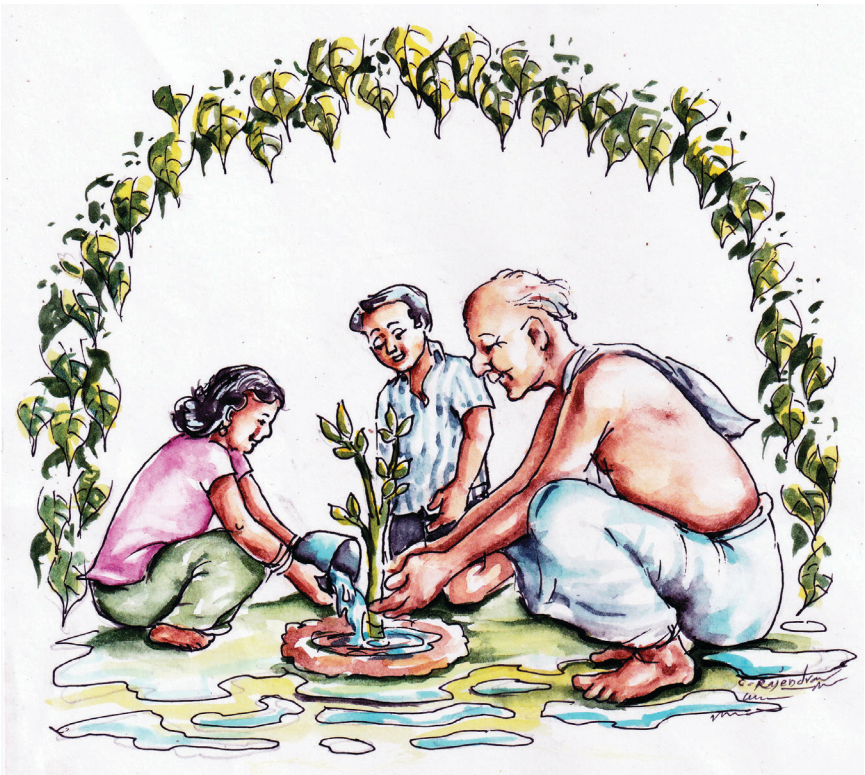

विशेष दिवस

साल भर हम विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय एवं प्रांतीय महत्व के दिवस मनाते हैं। उद्देश्य हैं- सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाना, इतिहास के विशेष संदर्भों से जुड़ना आदि।

इन्हें पहचानें ...

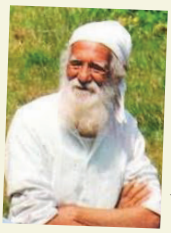

सुंदरलाल बहुगुणा

(जन्म : 9 जनवरी सन् 1927, मृत्यु : 21 मई 2021)

भारत के एक महान पर्यावरण-चिंतक एवं चिपको आंदोलन के प्रमुख नेता थे । उन्होंने हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों में वनों के संरक्षण के लिए संघर्ष किया।

- **प्रकृति-संरक्षण के लिए कार्यरत प्रसिद्ध व्यक्तियों पर विशेषांक निकालें ।**

मदद लें...

एक रोज़ - एक दिन

हट्टे-कट्टे - सशक्त (बलवान)

झट - जल्दी, പെട്ടെന്ന്, quickly, விரைவில், ಬೇಗನೆ

चढ़ गई - കയറി, climbed, ಹತ್ತುವುದು, ಏರುವುದು, ஏறினான்

धमकाया - ഭീഷണിപ്പെടുത്തി, threatened, அச்சுறுத்துதல், ಬೆದರಿಕೆ ಹಾಕು.

डराया - ഭയപ്പെടുത്തി, frightened, ಹೆದರಿಸಿತು, யப்படுத்துதல்

बहोत - बहुत

मैं नहीं उतरूँगी - ഞാൻ ഇറങ്ങില്ല, I will not get down, ನಾನು ಕೆಳಕ್ಕೆ ಇಳಿಯಲಿಕ್ಕಿಲ್ಲಲ, நான் றங்கமாட்டேன்

चिल्लाई - शोर मचाया

आखिर - अंत में

गद्दा - മെത്ത, mattress, மெத்தை, ದಪ್ಪದ ಹಾಸಿಗೆ

कंबल - കമ്പിളി, blanket, ಕಂಬಳಿ, கம்பிளி

चहचहाई - प्रसन्न होकर मधुर शब्द में बोली

सर्दी - ठंड

आँधी - dust storm
बहुत तेज़ चलनेवाली हवा
जिससे इतनी धूल उड़े
कि चारों ओर अंधेरा छा जाए
ದೂಳನ್ನು ಎಬ್ಬಿಸಿದ
ಬಿರುಗಾಳಿ,
புழுதிப்புயல்

तूफ़ान - violent storm of wind and rain,
சூறாவளியும்
மழையும்,
ಗಾಳಿ ಮತ್ತು
ಮಳೆಯಿಂದ
ಕೂಡಿದ ಬಿರುಗಾಳಿ,
वह तेज़ आँधी जिसमें खूब धूल उड़े और पानी बरसे।

अजीबोगरीब - अत्यंत विचित्र

तरकीबें - उपाय

नहीं तोड़ पाओगे - തകർക്കാൻ കഴിയില്ല, cannot be broken, ಹಾಳುಮಾಡಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲ, உடைக்க இயலாது

बुलंद आवाज़ - ज़ोर की आवाज़

अनोखी - विचित्र

किस्सा - कहानी

मशहूर हो गया - प्रसिद्ध हो गया

इर्द-गिर्द - चारों ओर

इकट्ठा होने लगे - കൂട്ടംകൂടാൻതുടങ്ങി, began getting gathered, ட்டம் கூடத் தொடங்கியது, ಒಟ್ಟು ಸೇರಲು ಪ್ರಾರಂಭವಾಯಿತು

इंतज़ार करने के बाद - प्रतीक्षा करने के बाद

वादा ले लिया - वचन ले लिया

❄

नेहा सिंह

नेहा सिंह का जन्म 5 मई 1982 को वाराणसी में हुआ था। वे हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में लिखती हैं और उनकी उन्नीस किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। बच्चों के लिए खासकर 'म्यूज़िकल नाटक' बनाना उन्हें बेहद पसंद है। वे बच्चों के लिए कहानियाँ, कविताएँ लिखती हैं, "राही" नाम की थिएटर कंपनी चलाती हैं और लड़कियों-महिलाओं के लिए एक कैंपेन चलाती हैं जिसका नाम है "व्हाई लोइटर"। उनकी पहली पुस्तक है 'द वेनेसडे बाज़ार' जो सन् 2014 में प्रकाशित हुई।

इकाई दो

पलते रिश्ते

कहानी

हाची की कहानी

गीत चतुर्वेदी

1923 का समय। जापान की राजधानी टोक्यो में सड़क पर टहलते प्रोफेसर यूएनो को कुत्ते का एक पिल्ला मिलता है। अकीता नस्ल का एक शानदार पिल्ला, जिसके गले पर पट्टा बँधा है। उसपर लिखा है- हाची। जापानी भाषा में हाची का अर्थ होता है आठ, वह अंक, जिसे पूरा जापान बहुत सौभाग्यशाली मानता है। लेकिन पिल्ला ऐसी मज़बूर हालत में था कि लगे, भाग्य का मारा है।

पिल्ले को 'भाग्य का मारा' क्यों कहा गया है ?

प्रोफेसर ने तय किया कि मैं इस कुत्ते के मालिक को खोजूँगा। जब तक वह नहीं मिलेगा, यह मेरे साथ ही रहेगा। उसे साथ लेकर वह रोज़ उसके मालिक को खोजने निकलते, लेकिन वह कहीं नहीं मिला। रोज़ के इस संग-साथ के कारण दोनों में ऐसा लगाव बन गया कि हाची अब उन्हींको अपना मालिक मानने लगा। प्रोफेसर की पत्नी को शुरू में हाची पसंद नहीं आया। लेकिन उसकी सुंदरता और प्रोफेसर के प्रति उसके स्नेह ने उनका दिल पिघला दिया।

समय बीतता गया । उन दोनों की दोस्ती गहरी होती गई । प्रोफेसर सुबह ट्रेन पकड़कर दफ़्तर जाते और शाम को लौटकर हाची के साथ खेलते । एक सुबह, हाची भी प्रोफेसर के पीछे-पीछे चलता हुआ स्टेशन पहुँच गया । उनको बहुत अजीब लगा । उन्होंने समझाना चाहा, लेकिन हाची घर लौटने को राज़ी नहीं था । आखिर प्रोफेसर खुद उसे घर तक छोड़कर आए और दफ़्तर देर से गए। शाम को काम से लौटने के बाद जब वे ट्रेन से उतरकर अपने स्टेशन के फाटक से निकले, तो देखा, बाहर सड़क पर हाची उनका इंतज़ार कर रहा है । वह उनके साथ-साथ पैदल घर लौटा । फिर तो यह रोज़ का सिलसिला बन गया । हर सुबह हाची, प्रोफेसर को छोड़ने स्टेशन तक जाता और शाम को उनके आने से पहले ही स्टेशन के बाहर बैठकर उनका इंतज़ार करने लगता । फिर साथ-साथ घर आता, उछलते-पुलकते ।

एक शाम, हाची स्टेशन के बाहर बैठकर इंतज़ार कर रहा था। बहुत देर हो गई, लेकिन प्रोफेसर लौटकर नहीं आए । रात हो गई। बर्फ़ गिरने लगी , पर न तो प्रोफेसर आए, न ही हाची उस जगह से हिला । दरअसल, उस दोपहर को दफ़्तर में प्रोफेसर का निधन हो गया था । अब उन्हें कभी नहीं लौटना था । लेकिन हाची को यह बात कैसे पता चल

सकती थी? उसे तो बस इतना समझ आया कि उसका दोस्त इस जगह, ट्रेन से उतरकर, हर रोज़ उसके पास लौट आता था, आज नहीं लौटा है। हो सकता है, थोड़ी देर बाद आ जाए।

देर रात प्रोफेसर के परिजन उसे ज़बरन घर ले गए, लेकिन अगली सुबह हाची फिर उसी जगह आकर बैठ गया। उसे विश्वास था कि प्रोफेसर रोज़

प्रोफेसर के परिजन हाची को ज़बरन घर ले गए - क्यों?

की तरह स्टेशन के उस दरवाज़े से निकलकर आएँगे। उससे प्यार करेंगे और फिर वे दोनों खेलते-टहलते घर लौटेंगे। वह रोज़ सुबह स्टेशन के बाहर उसी जगह बैठ जाता और देर रात घर लौट आता।

कुछ समय बाद प्रोफेसर की पत्नी ने मकान बेच दिया और दूसरे शहर चली गई। वह अपने साथ हाची को भी लेती गई थी, लेकिन हाची वहाँ से भाग आया और स्टेशन के बाहर ठीक उसी जगह पर बैठकर फिर से इंतज़ार करने लगा। स्टेशन के आसपास लोग उसे पहचानते थे। वे लोग हाची को खाना खिला देते। वह दिन-भर स्टेशन को देखता रहता। ट्रेन आती, तो उचक-उचककर अपने प्रोफेसर को खोजा करता। रात होती, सिर झुकाकर वह यार्ड में सोने चला जाता।

एक साल... दो साल... तीन साल... पूरे नौ साल और नौ महीने तक हाची ठीक उसी जगह बैठ अपने प्रोफेसर का इंतज़ार करता रहा, जिसे एक सुबह उसने ट्रेन में बिठाकर विदा किया था। लेकिन जो फिर कभी लौटकर नहीं आया। सर्दी,गर्मी, बरसात, बर्फ़ हाची को इन सबसे कोई फ़र्क नहीं पड़ा।

बीच में कभी, किसी बरस प्रोफेसर की पत्नी अपने पति की कब्र पर फूल चढ़ाने आ जाती तब वह हाची के साथ सड़क पर बैठकर रोती रहती। और शायद उस मूक जानवर के प्रेम, समर्पण व प्रतीक्षा पर अचरज करती। समय के साथ हाची बूढ़ा हो गया। लेकिन उसने इंतज़ार करना नहीं छोड़ा। 1935 में उसी जगह बैठे-बैठे उसने दम तोड़ दिया। उस समय बर्फ़ गिर रही थी। मरे हुए हाची की खुली आँखों को जैसे अब भी इंतज़ार था।

'सर्दी, गर्मी, बरसात, बर्फ़ हाची को इन सबसे कोई फर्क नहीं पड़ा।' इससे क्या तात्पर्य है ?

' मरे हुए हाची की खुली आँखों को जैसे अब भी इंतज़ार था।' विचार करें।

"हाची की स्मृति में स्टेशन के बाहर उसकी प्रतिमा स्थापित है।"

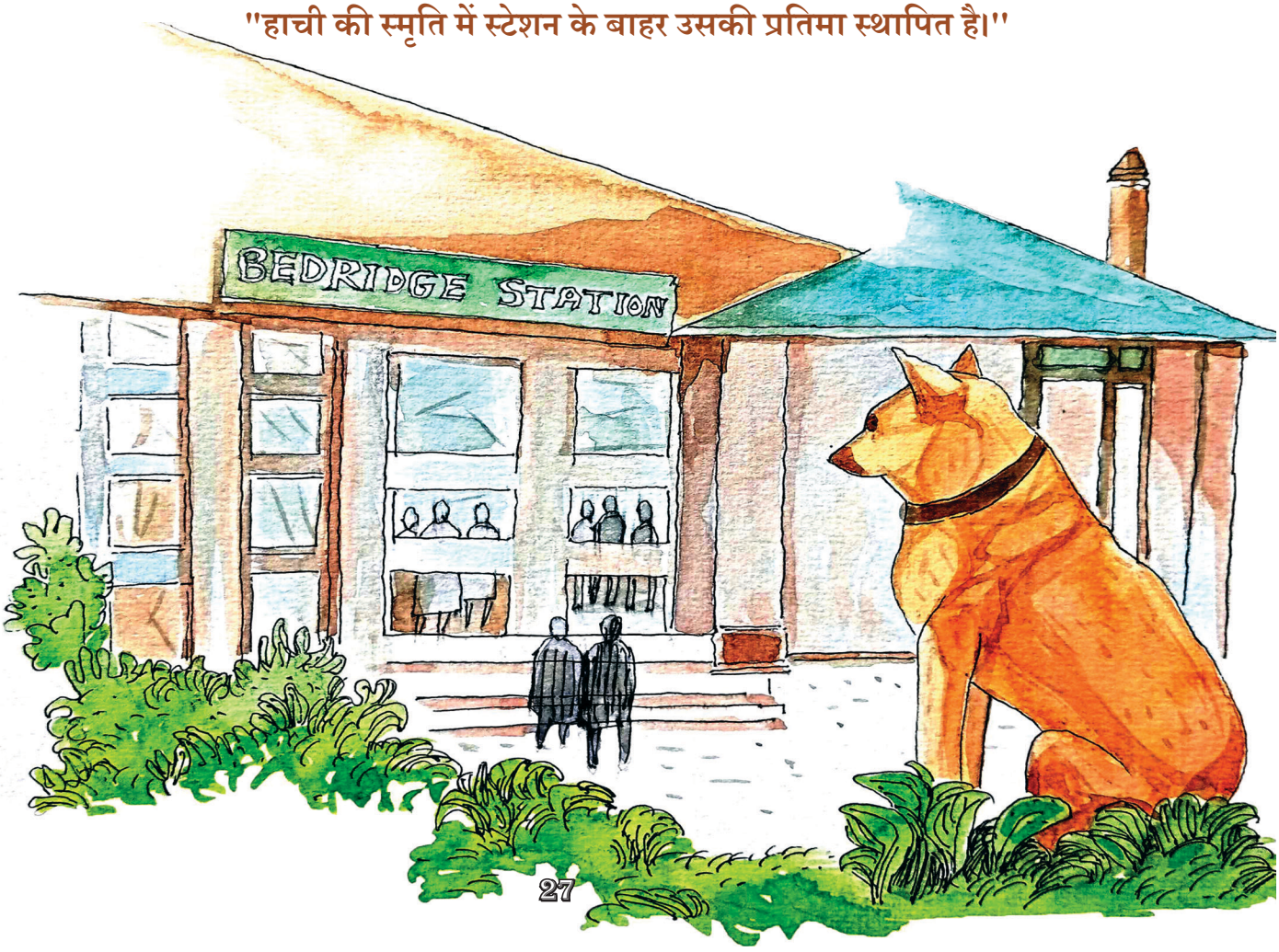

आगे...

● घटनाओं के क्रमानुसार चित्रों को नंबर दें और प्रसंगानुकूल वाक्य चुनकर लिखें।

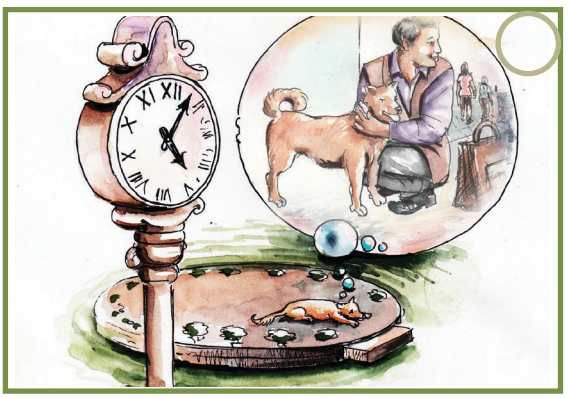

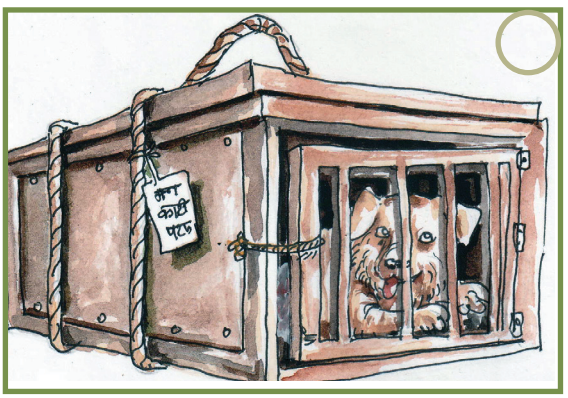

- हाची प्रोफेसर के परिवार का एक सदस्य बन जाता है।
- हाची को प्रोफेसर उठा लेता है।
- हाची की स्मृति में स्टेशन के बाहर उसकी प्रतिमा स्थापित की गई है।
- हाची कई दिनों से स्टेशन के बाहर प्रोफेसर के इंतज़ार में लेटा हुआ है।
- बक्से में बंद छोड़ा हुआ पिल्ला, हाची।
- प्रोफेसर और हाची के बीच का रिश्ता लोग आश्चर्य से देखते हैं।

पढ़ें और प्रश्न बनाएँ।

एक साल... दो साल... तीन साल... पूरे नौ साल और नौ महीने तक हाची ठीक उसी जगह बैठ अपने प्रोफेसर का इंतज़ार करता रहा, जिसे एक सुबह उसने ट्रेन में बिठाकर विदा किया था। लेकिन जो फिर कभी लौटकर नहीं आया। सर्दी, गर्मी, बरसात, बर्फ़ हाची को इन सबसे कोई फ़र्क नहीं पड़ा।

बीच में कभी, किसी बरस प्रोफेसर की पत्नी अपने पति की कब्र पर फूल चढ़ाने आ जाती तब वह हाची के साथ सड़क पर बैठकर रोती रहती। और शायद उस मूक जानवर के प्रेम, समर्पण व प्रतीक्षा पर अचरज करती।

- **नमूने के अनुसार खाली गोले भरें।**

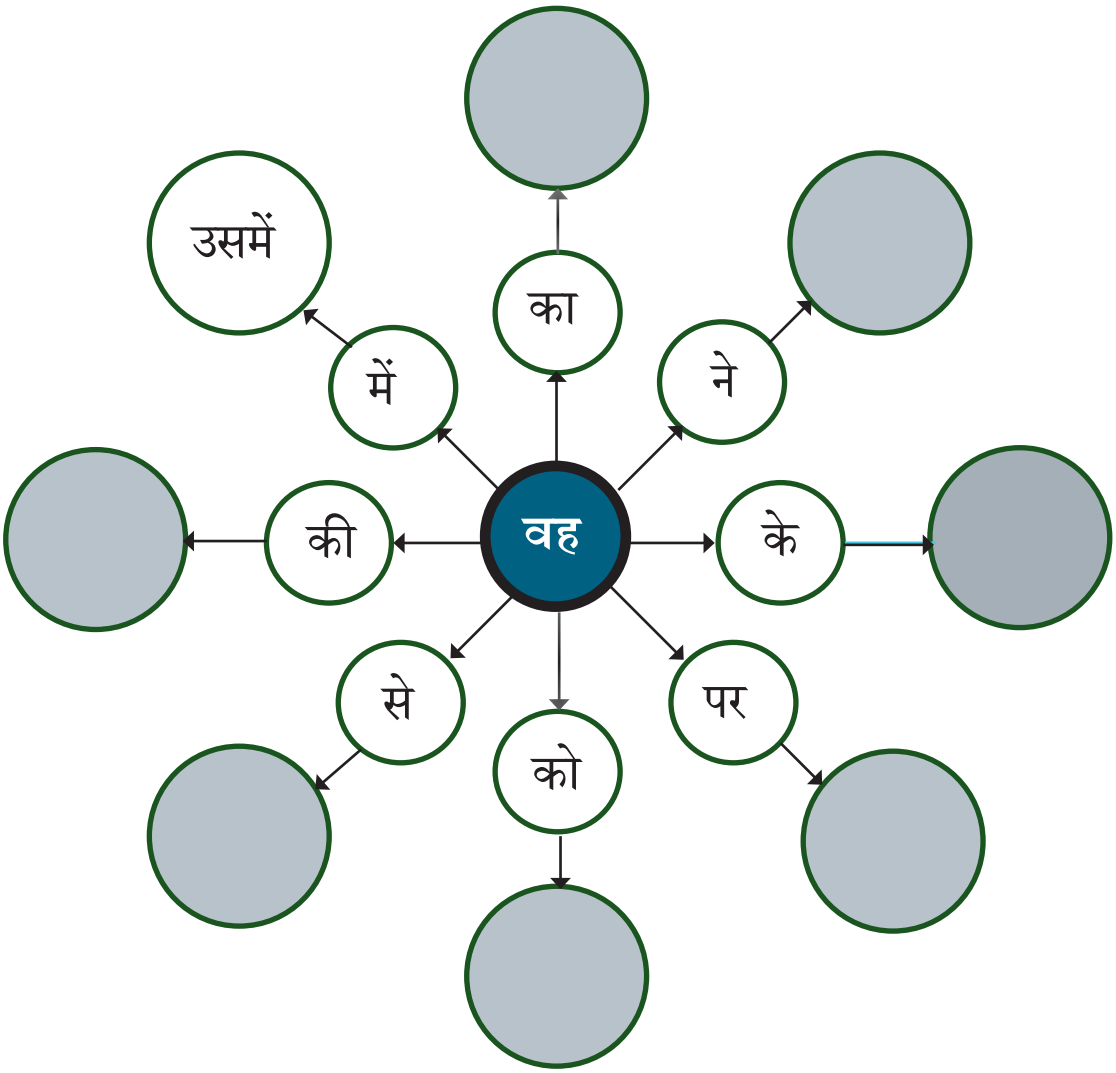

- **नमूने के अनुसार कहानी से शब्द-युग्मों को चुनकर लिखें।**

संग-साथ	.....
.....	.....
.....	.....

- रेखांकित शब्द की विशेषता पहचानें।

शानदार पिल्ला।

- निम्नलिखित प्रत्येक शब्द का प्रयोग किन-किन शब्दों की विशेषता सूचित करने के लिए किया गया है ? कहानी से ढूँढ़कर लिखें।

मज़बूर	.....
बहुत	.....
रोज़	.....
खुली	.....
गहरी	.....
मूक	.....

- वाक्य पढ़ें। वाक्य के अन्य शब्दों के साथ रेखांकित शब्द का संबंध पहचानें।

मालिक मानने लगा।
बर्फ़ गिरने लगी।

' लग ' जोड़कर वाक्य लिखें।

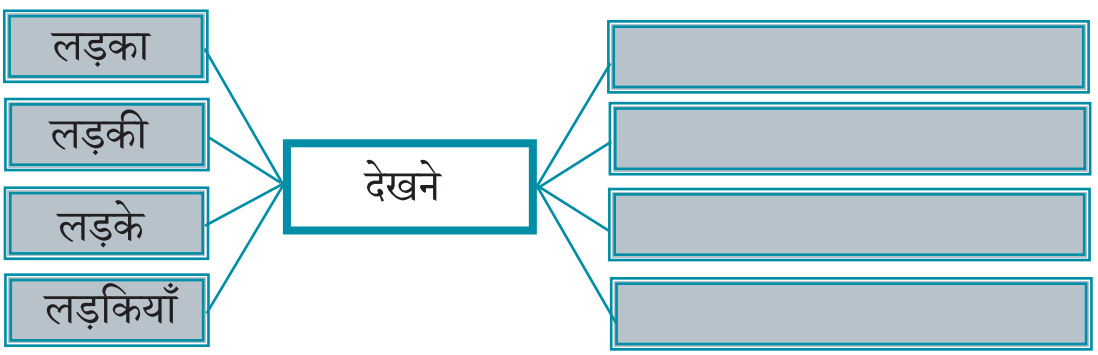

पढ़ें और लिखें।

समय के साथ हाची बूढ़ा हो गया। लेकिन उसने इंतज़ार करना नहीं छोड़ा। 1935 में उसी जगह बैठे-बैठे उसने दम तोड़ दिया। उस समय बर्फ़ गिर रही थी। मरे हुए हाची की खुली आँखों को जैसे अब भी इंतज़ार था।

- प्रोफेसर यूएनो के इंतज़ार में बैठे-बैठे 1935 में हाची ने दम तोड़ दिया।

-इसपर समाचार तैयार करें ।

अनुबद्ध कार्य

'मानव और पशु-पक्षी अटूट संबंध रखते हैं।' इसपर अपना कोई अनुभव लिखें।

मदद लें...

टहलने - धीरे-धीरे चलने

कुत्ते का पिल्ला - कुत्ते का बच्चा

अकीता - बड़े आकार के एक जापानी कुत्ते की नस्ल।

नस्ल - वंश

शानदार - बढ़िया

पट्टा - ಬೆಲ್ಟ್, belt

मज़बूर - विवश

भाग्य का मारा - भाग्यहीन

तय किया - निश्चित किया

संग-साथ - एक साथ

लगाव - അടുപ്പം/ഇഷ്ടം, attachment, लगे होने का भाव, ಬಾಂಧವ್ಯ, பற்றுடைய

दिल पिघला दिया - मन में दया उत्पन्न हुई।

अजीब - विचित्र

राज़ी - സമ്മതം, willing, सहमत, ಒಪ್ಪಿಗೆ, சம்மதம்

खुद - स्वयं

इंतज़ार - प्रतीक्षा

पैदल घर लौटा - पैरों से चलकर घर लौटा

सिलसिला - क्रम

सिलसिला बन गया - आदत बन गई

साथ-साथ - एक साथ

उछलते-पुलकते - उल्लसित होते

देर हो गई - താമസം നേരിട്ടു, became late, ತಡವಾಯಿತು, தாமதமாகுதல்

दरअसल - वास्तव में (असल में)

निधन - मृत्यु

परिजन	- परिवार के लोग/ आश्रित लोग
ज़बरन	- बलपूर्वक
उचक-उचककर	- कूद-कूदकर
आस-पास	- चारों ओर
यार्ड	- बाहर का घासवाला क्षेत्र, യാർഡ്, yard, முற்றம், ಅಂಗಳ
विदा	- വിട, Farewell, ವಿದಾಯ, வழியனுப்பு விழா
बर्फ़	- बरफ़
फर्क	- अंतर
बरस	- वर्ष
मूक	- चुप
कब्र	- ശവകുടീരം, tomb ಶವ ಕುಠೀರ,ಸಮಾಧಿ ಸ್ಥಳ, கல்லறை
अचरज	- आश्चर्य
दम तोड़ दिया	- അന്ത്യശ്വാസം വലിച്ചു, died, இறந்தார், ಮರಣ ಹೊಂದಿದರು

❄

गीत चतुर्वेदी

गीत चतुर्वेदी का जन्म 27 नवंबर 1977 को मुंबई में हुआ। आप हिंदी के कवि, कथाकार और अनुवादक हैं। 'आलाप में गिरह', 'न्यूनतम मैं', 'खुशियों के गुप्तचर' आदि आपके कविता संकलन हैं। कविता के लिए भारत भूषण सम्मान प्राप्त हुआ। कथा-रचना के लिए कृष्ण प्रताप सम्मान, कृष्ण बलदेव फेलोशिप, सैयद हैदर रज़ा फेलोशिप आदि प्राप्त हुए।

बाबा और बाबा की छड़ी

गुलज़ार

साथ-साथ चलते हैं दोनों
बाबा और बाबा की छड़ी !

पहले वो कहता है चल...चल बाहर चलते हैं
और उठा लेता है छड़ी को
बिस्तर पर जो लेटी हुई थी !
फिर वो उसका हाथ पकड़के बाहर लाती है,
साथ-साथ चलते हैं दोनों
बाबा और बाबा की छड़ी !

'साथ-साथ चलते हैं दोनों
बाबा और बाबा की छड़ी !'
- इससे आप क्या समझते हैं ?

छड़ी भगा देती है कोई गली का कुत्ता भौंके तो
बाग तलक जाते हैं दोनों
थक जाए तो बाबा अक्सर, छड़ी पे माथा टेक के
बेंच पे बैठ भी जाता है
छड़ी ही उठकर कभी-कभी बाबा को दिखाती है
नया-नया जो बौर आया है नये-नये पेड़ों पर

' नया-नया जो बौर आया है नये-नये पेड़ों पर '
- इसका तात्पर्य क्या है ?

एक कदम जब वो चलती है
एक कदम वो चलता है
बाबा और बाबा की छड़ी !

बाबा और बाबा की छड़ी, दोनों में से कोई अकेला चल नहीं सकता। क्यों?

दोनों में से कोई अकेला चल नहीं सकता
हाथ अगर छूटे तो दोनों गिर पड़ते हैं
इक जवां, इक बूढ़ा है
बाबा और बाबा की छड़ी !!

आगे...

- **बाबा और छड़ी दोनों के आपसी संबंध की सूचना देने वाली पंक्तियाँ कविता से चुनकर लिखें।**

- साथ-साथ चलते हैं दोनों
- .....
- .....
- .....

ये आशय वाली पंक्तियाँ पहचानकर लिखें।

- छड़ी बाबा को गिरने से बचाती है।
- थक जाने पर छड़ी बाबा का सहारा बनती है।
- छड़ी और बाबा दोनों एक दूसरे के सहारे ही चल सकते हैं।

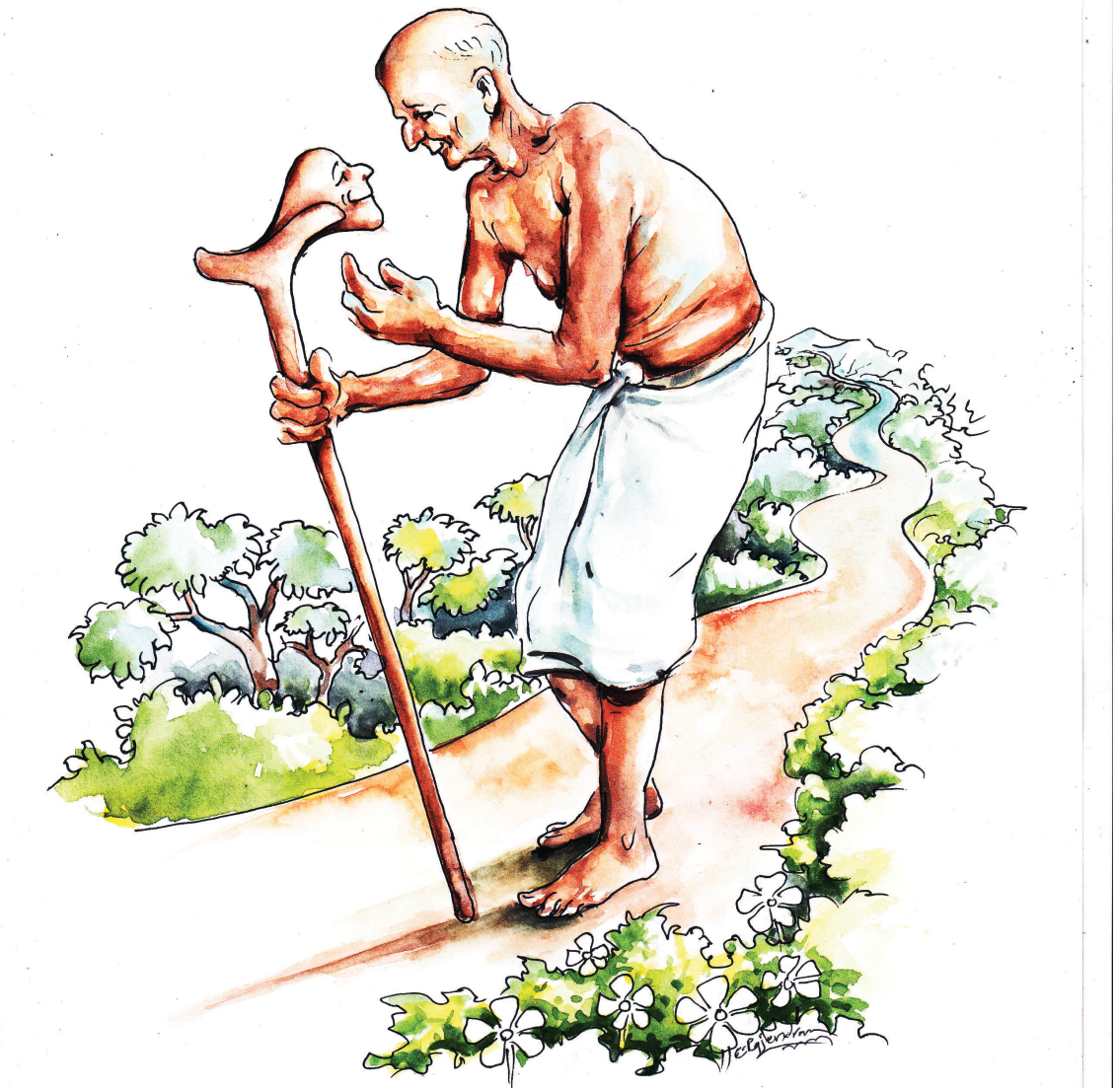

- **ये पंक्तियाँ पढ़ें। रेखांकित शब्दों का विश्लेषण करें। इन पंक्तियों के 'वो' (वह) किस-किस के लिए प्रयुक्त हैं ?**

'एक कदम जब वो चलती है
एक कदम वो चलता है
बाबा और बाबा की छड़ी !'

- **'वो'** (वह) **के बदले** 'बाबा / बाबा की छड़ी' में से उचित शब्द जोड़कर पंक्तियों का पुनर्लेखन करें।

एक कदम जब वो चलती है
एक कदम वो चलता है

- **पंक्तियाँ पढ़ें, सूचना के अनुसार लिखें।**

'पहले वो कहता है चल...चल बाहर चलते हैं
और उठा लेता है छड़ी को
बिस्तर पर जो लेटी हुई थी !
फिर वो उसका हाथ पकड़ के बाहर लाती है'

» **पहली पंक्ति का 'वो' किसके लिए प्रयुक्त किया गया है ?**

» **अंतिम पंक्ति का 'वो' किसके लिए प्रयुक्त किया गया है ?**

कविता की "छड़ी" किन-किन के प्रतीक हो सकते हैं ? (चर्चा करें)

- 'बाबा और बाबा की छड़ी' कविता की आस्वादन टिप्पणी लिखें।

खुद परखें...

अपनी आस्वादन टिप्पणी में	है	आंशिक है	नहीं है
कवि और कविता का परिचय			
कविता का सामान्य आशय			
विशेष पंक्तियों का उल्लेख			
शब्द और प्रयोगों का विश्लेषण			
अपना दृष्टिकोण			

अनुबद्ध कार्य

बुजुर्गों के कल्याण के लिए सरकार कई योजनाएँ चलाती हैं। इन योजनाओं की सूची तैयार करें।

विशेष दिवस

अगस्त और सितंबर महीनों के विशेष दिवसों को पहचानें।
कम से कम पाँच विशेष दिवसों को सूचीबद्ध करें।

मदद लें...

छड़ी - ഊന്നുവടി, walking stick, ಊರುಗೋಲು, ஊன்றுகோல்

वो - वह

बिस्तर - കിടക്ക, bed, படுக்கை, ಹಾಸಿಗೆ

गली - തെരുവ്, street, ಗಲ್ಲಿ, தெரு, बस्ती का तंग रास्ता

भौंकना - കുരയ്ക്കുക, to bark, குரைத்தல், ಬೊಗಳು

बाग - പൂന്തോട്ടം, garden, பூந்தோட்டம், ಹೂದೋಟ

बाग तलक - बाग तक

अक्सर - മിക്കവാറും, often, அடிக்கடி, ಕೆಲವೊಮ್ಮೆ, प्राय:

पे - पर

टेक के - रखकर

छड़ी पे माथा टेक के - छड़ी पर सिर रखकर

बौर - മാമ്പൂവ്, आम का फूल, மாம்பூ, ಮಾವಿನ ಹೂ

कदम - ചുവട്, step, கால் பாதம், ಹೆಜ್ಜೆ

अकेला - ഒറ്റയ്ക്ക്, alone, தனியாக, ಒಬ್ಬಂಟಿಗ

अगर हाथ छूटे तो - अगर हाथ की पकड़ अलग होती तो

इक - एक

जवां - युवक

गुलज़ार

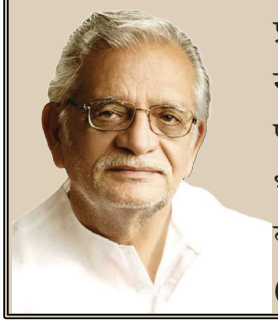

गुलज़ार का जन्म पंजाब के झेलम जिले के दीना गाँव में 18 अगस्त 1934 को हुआ था। गुलज़ार नाम से प्रसिद्ध संपूर्ण सिंह हिंदी फिल्मों के प्रसिद्ध गीतकार हैं। इसके अतिरिक्त आप कवि, पटकथाकार, फ़िल्म निर्देशक, नाटककार तथा प्रसिद्ध शायर भी हैं। उनकी रचनाएँ मुख्यतः हिंदी, उर्दू तथा पंजाबी में हैं। वे वर्ष 2002 में साहित्य अकादमी पुरस्कार और वर्ष 2004 में भारत सरकार द्वारा दिए जाने वाले पद्मभूषण से सम्मानित हुए। चौरस रात (लघु कथा संग्रह), जानम (कविता संग्रह), एक बूँद चाँद (कविता संग्रह), रावी पार (कथा संग्रह) आदि उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

इकाई तीन

खुलते नज़ारे

जब हम धीरे चलते हैं

एलन शॉ

मैं हमेशा की तरह मेट्रो में स्केचिंग करता घर लौट रहा था। तभी एक लड़की पास आकर मेरा काम देखने लगी। उसका नाम लुआना था। उसे काम इतना दिलचस्प लगा कि उसने अपना विज़िटिंग कार्ड मुझे दिया और मिलने का वादा किया। कुछ दिनों बाद वो अपने दोस्त मैनुअल के साथ मुझसे मिलने आई। उनकी संस्था "कला थिएत्रो" इटली के फ्रिउली इलाके में एक चलता-फिरता थिएटर शुरू करना चाहती थी। इसमें चित्रकार, संगीतकार, डांसर, फोटोग्राफर सब होने थे।

लुआना खुद इस ग्रूप की एक बेहतरीन डांसर हैं। उन्होंने मुझे इस यात्रा को चित्रों में दर्ज करने का न्यौता दिया। मेरे पास हाँ के अलावा कोई जवाब न था।

'मेरे पास हाँ के अलावा कोई जवाब न था'
- लेखक के इस कथन का तात्पर्य क्या है ?

इस प्रोजेक्ट का मक़सद स्लो ट्रैवल का अनुभव लेना था। मध्यकाल में लोग गधे पर सामान बाँधकर एक से दूसरी जगह ले जाते थे। हमारा रूट भी एक ऐसा ही मध्यकालीन रास्ता था। यह अलग-अलग शहरों से होकर गुज़रता था। हमारे साथ फिआक्को नाम का एक गधा भी था। या यूँ कहें कि हम फिआक्को के साथ थे। हम उसके पीछे-पीछे चल रहे थे। फिआक्को का मालिक एल्लीया भी साथ था। तय हुआ कि जहाँ-जहाँ फिआक्को रुकेगा, हम भी वहीं रुक जाएँगे।

हमें कहीं पहुँचने की जल्दी नहीं थी। हम रास्ते में कहीं भी रुककर नाचने-गाने-बजाने लगते थे। जिस शहर में शाम को परफार्म करते, वहीं रात गुज़ारते थे। मैं इन सब को कागज़ पर उकेरता रहता। शुरुआत नदी से दुआ माँगने से हुई। कैथरीना ने एक सुंदर गाना गाया। कइयों की आँखें भीग गईं। मुझे नदी से यूँ दुआ माँगना बहुत अच्छा लगा।

'हमें कहीं पहुँचने की जल्दी नहीं थी'
- इस कथन में कला थिएत्रो की कौन-सी विशेषता प्रकट होती है ?

अचानक फिआक्को चलते-चलते रुक गया। आगे नदी रास्ता पार कर रही थी। शायद फिआक्को उसे पार नहीं करना चाहता था। हम भी रुक गए। कुछ ने आराम किया। कुछ ने फल खाए। एल्लीया ने फिआक्को को मनाने की बहुत कोशिश की। पर वो टस-से-मस न हुआ। कोई पौन घंटे बाद क्रिस्टीना ने उसे गेहूँ की बालियाँ दिखाईं। उसे देखते-देखते फिआक्को सड़क पार कर गया। पर सभी

' टस-से-मस न हुआ '
- इस प्रयोग का मतलब क्या है ?

उसके साथ नहीं चले। वे बातों में मशगूल थे। सब साथ थे। मज़े में थे।

कैथरीना उस पार गेहूँ के खेत में जाकर गाने लगी। उसके गाने में इतनी कशिश थी कि सब खिंचे चले आए। कुछ ने खेत से बालियाँ उचकाईं। मैंने एक हाथ में उल्टा पकड़ा पौधा देखा। उसकी जड़ ऊपर थी जो फूलों की तरह लग रही थी।

‘ उसकी जड़ ऊपर थी जो फूलों की तरह लग रही थी ।’ -ऐसा कोई दृश्य आपने कभी, कुछ अलग तरीके से महसूस किया है ?

यह है मैत्तेयो- आधा फ्रेंच, आधा इटालियन। मैत्तेयो स्लेवेनिया और इटली के बॉर्डर पर रहता है। हमारी मंडली का सबसे छोटा सदस्य। हम उसे बच्चा-बच्चा बुलाते थे, पर जब वो संगीत बजाता तो जैसे समा बँध जाता था। अकॉर्डियन पर उसकी बजाई खूबसूरत धुनें हवाओं को थिरका देती थीं।।

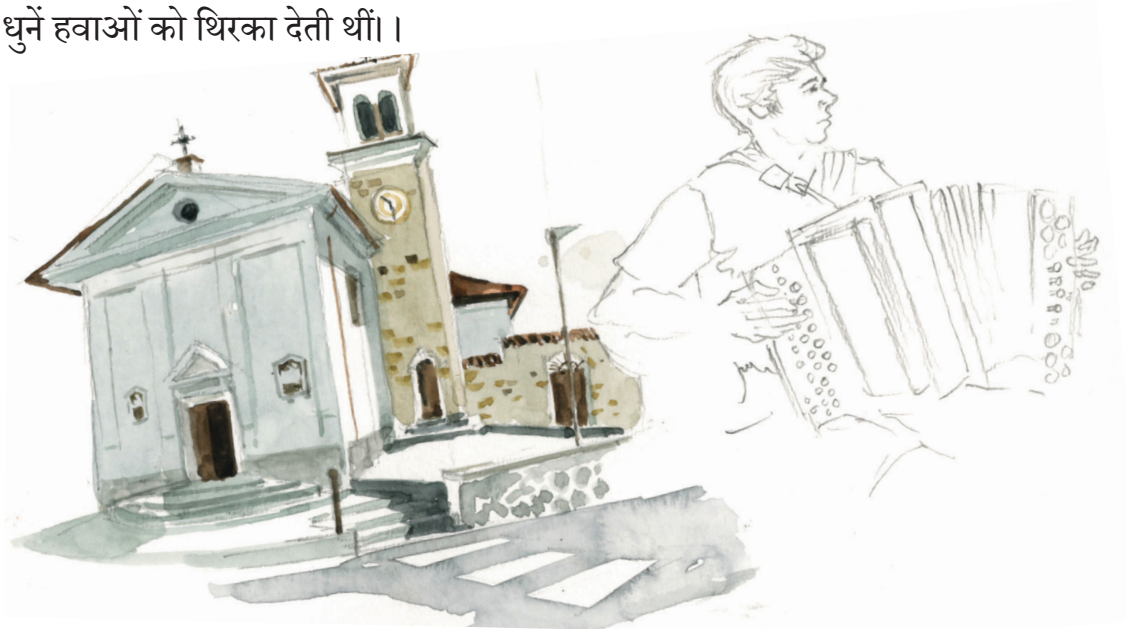

दिन में हम जहाँ से भी गुज़रते, लोग हमें शो का न्यौता देते थे। एक महिला ने अपनी बालकनी पर आकर कहा कि वे चल नहीं सकती हैं। इसलिए नहीं आ पाएँगी। यह सुनकर मैत्तेयो ने वहीं खड़े होकर उनके लिए परफॉर्म किया।

बालकनी में खड़ी महिला के लिए मैत्तेयो ने वहीं खड़े होकर परफॉर्म किया। - यहाँ मैत्तेयो का कौन-सा मनोभाव प्रकट होता है ?

मैं जैतून के एक पेड़ के नीचे बड़े-से कैनवस पर चित्र बना रहा था। स्टेज भी वहीं था जहाँ परफॉर्मेंस हो रहे थे। अपने पसंदीदा पेड़ के नीचे बैठ मैं बड़ा खुश था। मुझे जैतून की पत्तियाँ बहुत सुंदर लगती हैं।

मैंने उस शहर के चर्चों को उलटा बनाया। अपने पेन की तरह। मैं यह बना ही रहा था कि कैथरीना गाते-गाते रोने लगी। उसी समय जैतून के कुछ पत्ते मेरी स्केचबुक पर गिरे। मुझे वो आँसू की तरह लगे।

हमारा पिछला परफॉर्मेंस अच्छा नहीं हुआ था। हम सब तनाव में थे। पर

आज जैसे ही कुर्दिस्तान के अश्ति और ईरान के मेंहदी ने साज़ बजाते हुए गाना शुरू किया तो सब मज़े से उनके आस-पास नाचने लगे। अचानक लगा जैसे हम किसी धागे से बँधे हुए हैं। लगा, जैसे हम जैतून की पत्तियों से सरसरा रहे हैं।

'अचानक लगा जैसे हम किसी धागे से बँधे हुए हैं।' - यहाँ कला की कौन-सी विशेषता प्रकट होती है ?

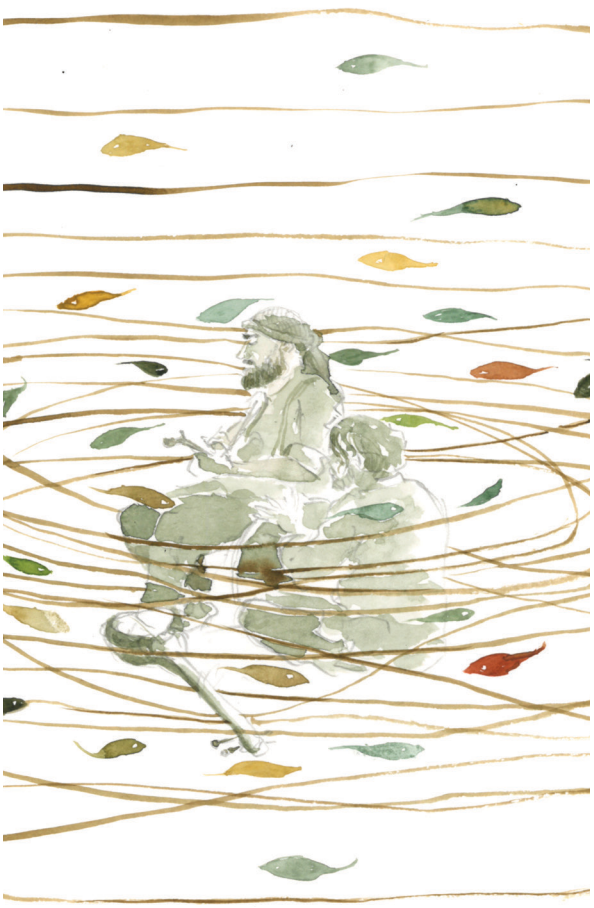

हमारा आखिरी परफॉर्मेंस कोर्डोवाडो नाम के एक कम्यून के एक किले में हुआ। वहाँ जाकर मुझे पता चला कि फिआक्को के असली मालिक का नाम एल्फी था। उनके बाद अब उनका बेटा एल्लीया उसका ख्याल रखता है। एल्लीया समेत सभी लोग बगीचे में चले गए। वहाँ बीच में एक पेड़ था। मुझे इटैलियन थोड़ी-बहुत ही आती है। वहाँ लोग कुछ गंभीर बात करते दिख रहे थे। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था। उस वक्त किसीसे पूछना ठीक भी नहीं लगा। सो मैं चुपचाप खड़ा रहा।

पहले तो उस पेड़ का चित्र बनाने का मेरा मन नहीं था । मुझे वो कुछ खास नहीं लगा था । बाद में पता चला कि वह पेड़ उस जगह के मालिक ने एल्फी की याद में लगाया था। एल्फी को फिआक्को बुरी हालत में मिला था। एल्फी ने उसकी बड़ी तीमारदारी कर उसे तंदुरुस्त किया । अब फिआक्को चौदह साल का है ।

मैं उस पेड़ का चित्र बनाने लगा । तभी फिआक्को घूमता हुआ उस पेड़ के सामने आ गया । मैंने उसे चित्र में शामिल कर लिया । पत्तियाँ बनाने लगा तो हल्की-हल्की बारिश होने लगी । मैंने स्केचबुक को खुला छोड़ दिया। पत्ते नहीं बनाए । बारिश ने जो पत्ते बनाए, वही इस चित्र में हैं । वो एकदम जादुई पल था । मैंने ऐसा चित्र पहले कभी नहीं बनाया था । इस चित्र को हमारी पूरी यात्रा की इंतेहा की तरह मानिए ।

उस शाम का परफॉर्मेंस ज़बरदस्त था। सब खुश थे । इस यात्रा ने हमें इतने प्यारे दोस्त दिए थे । हमने जाना कि सब मिलकर अगर वो करें जिसमें उनका दिल धड़कता है और उसे लोगों से साझा करते चलें तो दुनिया कितनी खूबसूरत हो जाती है । इस यात्रा से मुझमें कई बदलाव आए हैं । मेरा यकीन बढ़ा है कि जो चीज़ मुझे पसंद है, मुझे वही करते रहना चाहिए ।

लेखक को पहले पेड़ का चित्र बनाने का मन नहीं था, पर बाद में बनाने लगा - क्यों ?

आगे...

घटनाओं को क्रमबद्ध करें।

- मेट्रो में लेखक की मुलाकात लुआना से होना।
- फिआक्को के साथ यात्रा की शुरुआत होना।
- नदी के पास फिआक्को का रुक जाना।
- क्रिस्टीना का फिआक्को को बालियाँ दिखाना।
- खेत में जाकर कैथरीना का गाना।
- बालकनी पर खड़ी महिला के लिए मैत्तेयो का परफॉर्म करना।
- लेखक के पेड़ का चित्र खींचने का प्रयास करना।

पढ़ें -

'हमारा पिछला परफॉर्मेंस अच्छा नहीं हुआ था। हम सब तनाव में थे। पर आज जैसे ही कुर्दिस्तान के अश्ति और ईरान के मेंहदी ने साज़ बजाते हुए गाना शुरू किया तो सब मज़े से उनके आस-पास नाचने लगे। अचानक लगा जैसे हम किसी धागे से बँधे हुए हैं। लगा, जैसे हम जैतून की पत्तियों से सरसरा रहे हैं।'

' उस दिन के अपने परफॉर्मेंस के बारे में कैथरीना अपनी डायरी में लिखती है। '

- कैथरीना की वह डायरी लिखें।

पढ़ें और लिखें...

" एक महिला ने अपनी बालकनी पर आकर कहा कि वे चल नहीं सकती हैं। इसलिए नहीं आ पाएँगी। यह सुनकर मैत्तेयो ने वहीं खड़े होकर उनके लिए परफॉर्म किया।"
- इस अवसर पर महिला और मैत्तेयो के बीच में हुई बातचीत लिखें।

'जो चीज़ मुझे पसंद है मुझे वही करते रहना चाहिए।'
इस कथन पर आपका विचार क्या है ? टिप्पणी लिखें।

प्रकृति और कला के बीच अभिन्न संबंध है।
- इस विषय पर लेख तैयार करें।

अनुबद्ध कार्य

अपनी किसी एक यात्रा का विवरण तैयार करें।

मदद लें...

दिलचस्प - मनोरंजक

वो - वह

वादा किया - വാഗ്ദാനം ചെയ്തു, promised, वचन दिया, உறுதியளித்தல், ಮಾತುಕೊಡು

संस्था - സ്ഥാപനം, institution, நிறுவனம், ಸಂಸ್ಥೆ

चलता-फिरता - घूमता हुआ

बेहतरीन - श्रेष्ठ

चित्रों में दर्ज करने का - चित्रों का रूप देने का

न्योता - निमंत्रण

मकसद - लक्ष्य

रात गुज़ारते थे - രാത്രികഴിച്ചുകൂട്ടിയിരുന്നു, used to spend the night, रात बिताते थे இரவைக்கழித்தல், ರಾತ್ರಿ ಕಳೆಯುತ್ತಿದ್ದರು.

उकेरता रहता - വരച്ചുകൊണ്ടിരുന്നു, was sketching, வரைதல், ಕೆತ್ತನೆ ಮಾಡುತ್ತಾ ಇರುವುದು

टस से मस न हुआ - അനങ്ങാതിരുന്നു, not to stir, अपने स्थान से न हिला, அசையாதிருத்தல், ಅಲುಗಾಡದೆ ಇರುವುದು

पौन घंटे बाद - तीन चौथाई घंटे के बाद, after three-fourth the hour, മുക്കാൽ മണിക്കൂറിനുശേഷം, முக்கால் மணி நேரத்திற்குப் பிறகு, ಮುಕ್ಕಾಲು ಗಂಟೆಯ ನಂತರ.

गेहूँ की बालियाँ - ഗോതമ്പിന്റെ കതിരുകൾ, ears of wheat, கோதம்பு கதிர்கள், ಗೋಧಿಯ ತೆನೆಗಳು

बातों में मशगूल थे - സംസാരത്തിൽ മുഴുകിയിരുന്നു, engaged in conversation, பேச்சில் மூழ்கி இருந்தனர், ಮಾತಿನಲ್ಲಿ ಮುಳುಗಿ

कशिश - ആകർഷണം, attraction, கவர்ச்சி, ಆಕರ್ಷಣೆ

खिंचे चले आए - आकृष्ट होकर चले आए

बालियाँ उचकाईं - बालियाँ काट लीं

अकॉडियन - एक तरह का बाजा

धुनें - രാഗം ,Tune, இராகம், ಧ್ವನಿ गाने के विशिष्ट स्वरक्रम

थिरकाना - അംഗചലനങ്ങളോടെ നൃത്തം ചെയ്യിക്കൽ, to tempt one to dance நடனம் செய்வித்தல், ನೃತ್ಯ ಮಾಡಲು

जैतून के पेड़ - ഒലിവ് മരങ്ങൾ, olive trees, ஒலிவ் மர, ಒಲಿವಮರಂ

उलटा - തലകുത്തനെ, upside down, தலைகீழ், ಹಿಮ್ಮುಖವಾಗಿ

तनाव - ടെൻഷൻ, tension, டென்ஷன் (உத்வேக), பதட்டம்

साज - संगीत वाद्य यंत्र

धागे से - ചരടുകൊണ്ട്, with string, தாரதிந்த, கயிறு

ख्याल रखना - देखभाल करना

चुपचाप - निशब्द

तीमारदारी कर - പരിപാലിച്ച്, take care of பாதுகாத்தல், ಆರೈಕೆ ಮಾಡು

तंदुरुस्त किया - स्वस्थ बना दिया

शामिल कर लिया - ഉൾപ്പെടുത്തി, included, உட்படுத்துதல், ಸೇರಿಸಿಕೊಳ್ಳು

जादुई पल - മാന്ത്രിക നിമിഷം, magical moment விந்தை, ಮಾಂತ್ರಿಕ ನಿಮಿಷ

जबरदस्त - मज़बूत

दिल धड़कना - ഹൃദയമിടിക്കുക, heart is beating இதயத்துடிப்பு, ಹೃದಯ ಬಡಿತ

साझा करते - പങ്കിട്ടുകൊണ്ട്, by sharing, பகிர்தல், ಹಂಚಿಕೊಂಡು

यकीन - विश्वास

एलन शॉ बर्लिन में रहने वाला भारतीय कलाकार, चित्रकार, एनीमेटर और कहानीकार हैं। उनका जन्म 1973 को बिहार में हुआ था। उन्होंने नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ डिज़ाइन, अहमदाबाद से एनीमेशन फ़िल्म मेकिंग में विशेषज्ञता के साथ संचार डिज़ाइन की पढ़ाई की है। वे 25 से ज़्यादा सालों से अपने जीवन को स्केचबुक में रिकॉर्ड कर रहे हैं। उनको बच्चों के लिए चित्र बनाना और यात्रा करना बहुत पसंद है।

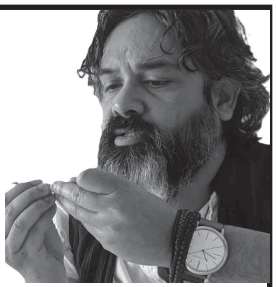

एलन शॉ

फ़िल्मी लेख

बाइसिकल थीव्स

वरुण ग्रोवर

सीधी-सी कहानी है। दूसरे विश्व युद्ध के बाद का इटली है। गरीबी और उदासी धूप की तरह पूरे देश में छाई हुई हैं। रोम में रहनेवाले

गरीबी और उदासी की तुलना धूप से की है। क्यों ?

अंतोनियो को नौकरी चाहिए। लेकिन नौकरी ऐसी मिली है जिसके लिए साइकिल होना ज़रूरी है। उसकी पत्नी मारिया बड़ी मुश्किलों से घर का सामान बेचकर साइकिल के पैसे जुटाती है। काम के पहले ही दिन अंतोनियो की साइकिल चोरी हो जाती है। वह अपने दस साल के बेटे ब्रूनो के साथ साइकिल खोजने निकलता है- पहले चोर बाज़ार फिर शहर के बाकी बदनाम इलाकों में। पिता और पुत्र हताशा और उम्मीद के बीच झूलते रहते हैं। अंतोनियो ने तो शायद दुनिया के बहुत दुःख झेले हैं। ब्रूनो के लिए बिखरती मानवता का यह पहला अनुभव है।

' बिखरती मानवता' का क्या तात्पर्य है ?

सब जगह से हारकर अंत में अंतोनियो को सड़क किनारे एक लावारिस साइकिल दिखती है। उसे पता है कि चोरी बुरी चीज़ है, लेकिन उसकी ईमानदारी उसकी भूख से टकरा रही है।

अपनी ईमानदारी भूख से टकराने पर आप क्या करेंगे?

अंतोनियो उस साइकिल को चुराने की कोशिश करता है, लेकिन पकड़ा जाता है। साइकिल का मालिक अंतोनियो की हालत देखकर उसे जाने देता है। अंतिम दृश्य में अंतोनियो और ब्रूनो भीड़ के साथ चल रहे हैं- टूटे हुए, शर्मिंदा। साइकिल नहीं है, लेकिन दुनिया में अभी भी करुणा है, उम्मीद है, एक और मुश्किल दिन है जिसका सामना करने निकली एक भीड़ है।

' मुश्किल दिन है जिसका सामना करने निकली एक भीड़ है।' - इसका क्या तात्पर्य है ?

एक सरल-सी कहानी हमें कहाँ-कहाँ ले जाती है। सही और गलत की परिभाषा, इतिहास का एक पाठ, युद्ध का असली चेहरा जो बारूद का धुआँ छँटने के बाद दिखता है और एक परिवार का महत्व।

फ़िल्में जितनी हँसाने या मन बहलाने के लिए होती हैं उतनी ही दिल तोड़ने और रुलाने के लिए भी। फ़िल्में कहानी के ज़रिए वह कहती हैं जो हमें एहसास दिलाता है कि हम कितने कमज़ोर हैं, ताकतवर हैं, संवेदनशील हैं, फूहड़ हैं, बदतमीज़

हैं। लेकिन सबसे ज़रूरी बात- हम अकेले नहीं हैं । दुनिया भर में, दूर-दूर के देशों में, ऐसे देशों में जहाँ लोग भाषा भी हमारी नहीं बोलते , ऐसे लोग हैं जो हमारी जैसी खुशियों से खुश हो रहे हैं , हमारे जैसे दुखों से टूट रहे हैं ।

फ़िल्में हमें बाँधती हैं- एक अदृश्य चाँदी की डोर में और खड़ा कर देती हैं एक बहुत ऊँची छत पर । हल्के से झोंके में उड़ना सीख जाते हैं हम किसी नई, करारी पतंग की तरह ।

❄

हम अकेले नहीं हैं ।- इसकी प्रासंगिकता पर विचार प्रकट करें।

आगे...

प्रत्येक वाक्य के रेखांकित शब्दों का संबंध पहचानें और वाक्यों की पूर्ति करें।

- अंतोनियो साइकिल चलाता है।
- अंतोनियो और ब्रूनो साइकिल ढूँढ़ते हैं।
- अंतोनियो की पत्नी मारिया घर के सामान बेचती है।

- बालक साइकिल खोजने ..... ।
- बालिका साइकिल खोजने ..... ।

निकलना

नमूने के अनुसार वाक्यों को जोड़कर लिखें।

उसे पता है।
चोरी बुरी चीज़ है।
> *उसे पता है कि चोरी बुरी चीज़ है।*

उन्हें उम्मीद है।
साइकिल मिलेगी।
> .....।

किसी मनपसंद सिनेमा की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए एक फ़िल्मी लेख तैयार करें।

- **आपके स्कूल के फिल्मोत्सव में बाइसिकल थीव्स सिनेमा का प्रदर्शन होने वाला है। - इसके लिए एक पोस्टर तैयार करें।**

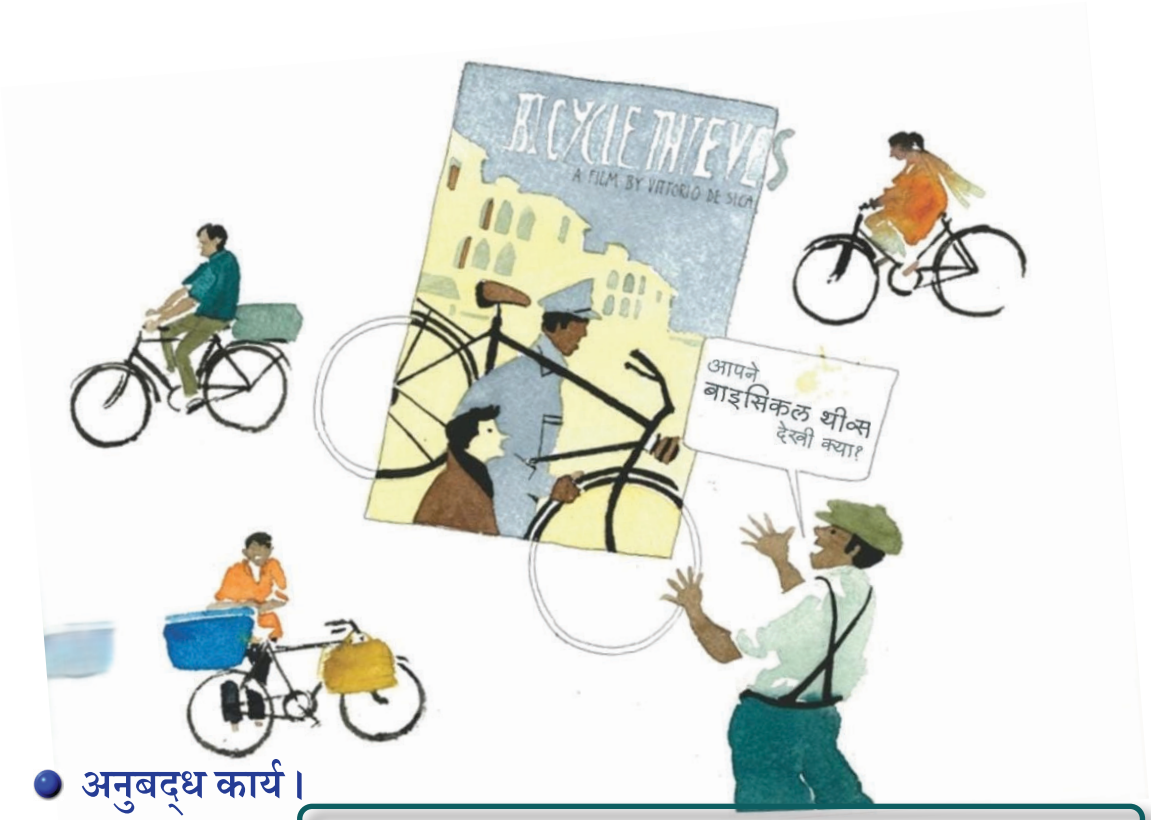

- **अनुबद्ध कार्य।**

' बाइसिकल थीव्स ' सिनेमा के प्रदर्शन के लिए एक प्रमो वीडियो तैयार करें।

वरुण ग्रोवर

वरुण ग्रोवर का जन्म 26 जनवरी 1980 को हिमाचल प्रदेश के सुंदर नगर में हुआ। आप लेखक, फिल्म गीतकार और फिल्म निर्माता हैं। आपको सर्वश्रेष्ठ फिल्म गीतकार पुरस्कार (2015), संवाद योजना के लिए फिल्म फेयर पुरस्कार (2022), आई आई एफ ए का सर्वश्रेष्ठ फिल्म गीतकार पुरस्कार (2016) आदि कई पुरस्कार प्राप्त हुए। 'पेपर चोर', 'बिक्सू', 'करेजवा' आदि आपकी प्रकाशित रचनाएँ हैं।

मदद लें...

उदासी - दुख

छाई - വ്യാപിച്ചു , spread, ವ್ಯಾಪಿಸು, பரவுதல்..

नौकरी - काम

जुटाना - एकत्रित करना

खोजना - അന്വേഷിക്കുക, to search, ಹುಡುಕುವುದು, தேடுதல்

बदनाम - അപകീർത്തി, infamous, புகழில்லாத, ಕುಖ್ಯಾತ

हताशा - निराशा

उम्मीद - विश्वास

झेले हैं - सहन किए हैं

बिखरती मानवता - ചിതറുന്ന മനുഷ്യത്വം , dispersing humanity, மனிதத்தை அழித்தல், ಛಿದ್ರವಾಗುತ್ತಿರುವ ಮಾನವೀಯತೆ

चुराने की - चोरी करने की

हालत - हाल

भीड़ - ആൾക്കൂട്ടം, crowd, மக்கள் கூட்டம், ಜನಸಮೂಹ

इतिहास - ചരിത്രം , history, வரலாறு, ಚರಿತ್ರೆ

बारूद - വെടി മരുന്ന്, gun powder, வெடி மருந்து, ಗುಂಡಿನ ಮದ್ದು

बहलाना - സന്തോഷിപ്പിക്കുക, to amuse ಸಂತೋಷಪಡಿಸು, மகிழ்ச்சியடைதல்

ज़रिए - മുഖേന, through ಮೂಲಕ, வழியாக

एहसास - തോന്നൽ , feeling, உணர்வு, ತೋರಿಕೆ

ताकतवर - ശക്തിമാനായ, mighty சக்தியுடையவன், ಬಲಶಾಲಿಯಾದ

फूहड़ - സംസ്കാരമില്ലാത്ത, uncultured, ಸಂಸ್ಕಾರವಿಲ್ಲದ பண்பாடற்ற

बदतमीज़ - മര്യാദയില്ലാത്ത, mannerless, மோசமான நடத்தை, ಕೆಟ್ಟ ನಡತೆ

बाँधना - കെട്ടുക, to tie ಕಟ್ಟುವುದು, கட்டுதல்

हवा के हल्के झोंके में - നേരിയ കാറ്റിൽ, in light blowing wind, மெல்லிய காற்றில் ನವಿರಾದ ಗಾಳಿಯಲ್ಲಿ

करारा - दृढ़

फ़िल्मी गीत
(फ़िल्म - तारे ज़मीन पर)

मेरी माँ...

प्रसून जोशी

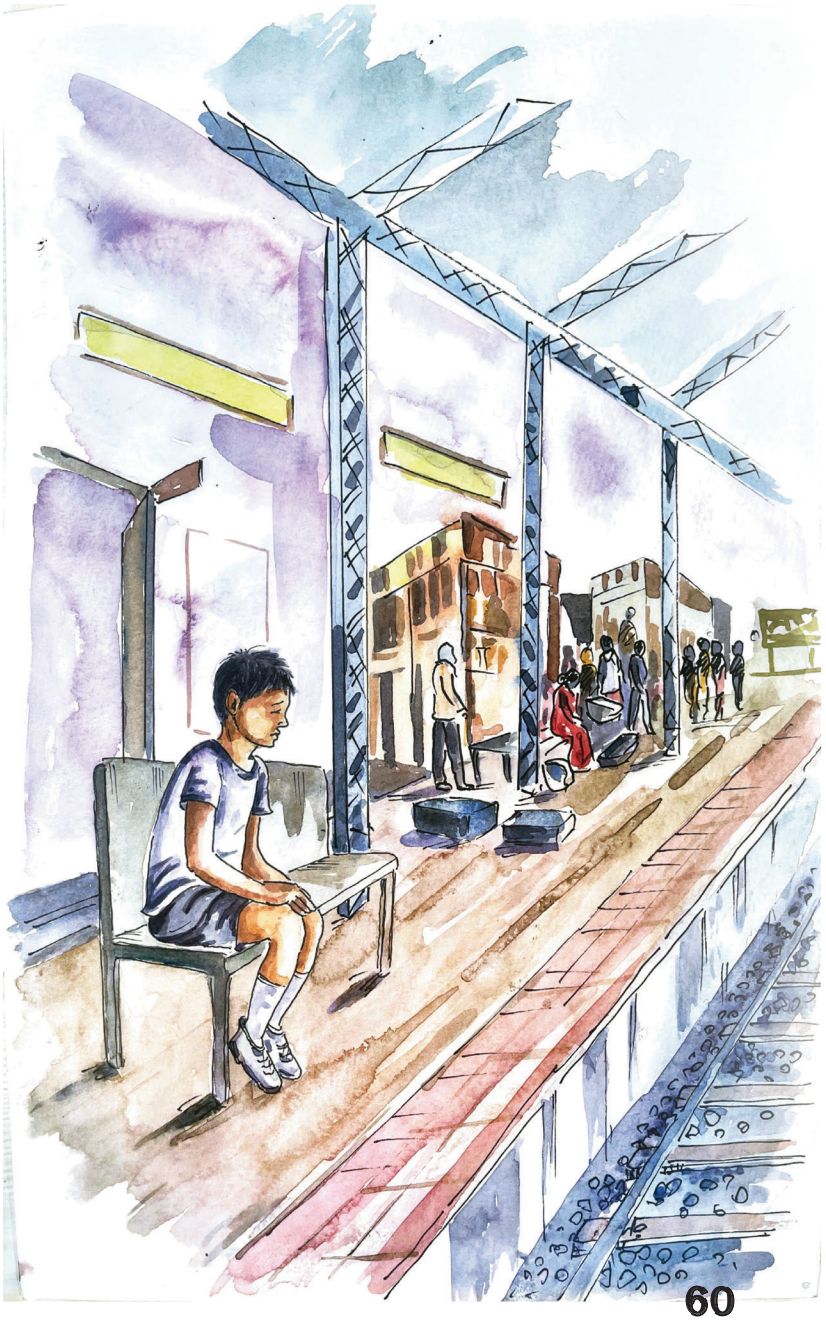

मैं कभी, बतलाता नहीं
पर अंधेरे से डरता हूँ मैं माँ
यूँ तो मैं, दिखलाता नहीं
तेरी परवाह करता हूँ मैं माँ
तुझे सब है पता, है न माँ
तुझे सब है पता... मेरी माँ

भीड़ में, यूँ ना छोड़ो मुझे
घर लौट के भी आ ना पाऊँ माँ
भेज ना इतना दूर मुझको तू
याद भी तुझको आ ना पाऊँ माँ
क्या इतना बुरा हूँ मैं माँ
क्या इतना बुरा... मेरी माँ

' तुझे सब है पता, है न माँ '
इस कथन से क्या व्यक्त होता है ?

' भेज ना इतना दूर मुझको तू '
बेटा क्यों ऐसा कहता होगा ?

जब भी कभी पापा मुझे
जो ज़ोर से झूला झुलाते हैं माँ
मेरी नज़र ढूँढ़े तुझे
सोचूँ यही तू आ के थामेगी माँ
उनसे मैं, ये कहता नहीं
पर मैं सहम जाता हूँ माँ
चेहरे पे, आने देता नहीं
दिल ही दिल में घबराता हूँ माँ
तुझे सब है पता है न माँ
तुझे सब है पता... मेरी माँ

ओ... मैं कभी, बतलाता नहीं
पर अंधेरे से डरता हूँ मैं माँ
यूँ तो मैं, दिखलाता नहीं
तेरी परवाह करता हूँ मैं माँ
तुझे सब है पता, है न माँ
तुझे सब है पता... मेरी माँ

ज़ोर से झूला झुलाते समय, सहम जाने पर भी बेटा पापा से क्यों शिकायत नहीं करता होगा ?

आगे...

- **इस फ़िल्मी गीत में आपके दिल को छूने वाली बातें चुनकर लिखें।**
- **इन बातों के प्रसंग पर ईशान अवस्थी की डायरी कल्पना करके लिखें।**

10 जनवरी

_____

_____

_____

अनुबद्ध कार्य

' तारे ज़मीन पर ' सिनेमा देखें और ईशान अवस्थी नामक पात्र की विशेषताएँ पहचानें। ईशान अवस्थी नामक पात्र का परिचय देते हुए टिप्पणी लिखें।

फ़िल्मी गीत करॉके के साथ आलाप करें, रिकॉर्ड करें।

विशेष दिवस

अक्तूबर और नवंबर महीनों के विशेष दिवसों को पहचानें।

कम से कम पाँच विशेष दिवसों को सूचीबद्ध करें।

मदद लें...

बतलाता नहीं - പറയാറില്ല, does not tell, ಹೇಳಲಿಕ್ಕಿಲ್ಲ, கூறுவதில்லை

अंधेरे से डरता हूँ - ഇരുട്ടിനെ പേടിക്കുന്നു, afraid of darkness, ತ್ತಲೆಯನ್ನು ಹೆದರುತ್ತೇನೆ, இருட்டிலிருந்து

दिखलाता नहीं - കാണിക്കാറില്ല, does not show, ತೋರಿಸಲಿಕ್ಕಿಲ್ಲ, காட்டுவதில்லை

परवाह करता हूँ - ശ്രദ്ധിക്കുന്നു, taking care of, ಕಾಳಜಿ, கவனம்

भीड़ में - തിരക്കിൽ, in the crowd, ಗುಂಪಿನಲ್ಲಿ, நெரிசலில்

ना छोड़ो मुझे - मुझे मत छोड़ो

लौट के - लौटकर

ना - नहीं

बुरा - മോശം, bad, ಕೆಟ್ಟ, மோசமான

ज़ोर से - ശക്തമായി, strongly, ಶಕ್ತಿಯಾಗಿ, சக்தியுடன்

जब झूला झुलाते हैं - ഊഞ്ഞാൽ ആട്ടുമ്പോൾ, swinging the hammock, ಉಯ್ಯಾಲೆ ಆಡುವಾಗ, ஊஞ்சல் ஆட்டும் வேளையில்

थामेगी - പിടിക്കും, will hold, ಹಿಡಿದಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುತ್ತದೆ, பிடித்தல்

मैं सहम जाता हूँ - ഞാൻ പരിഭ്രമിക്കുന്നു, I am terrified, ಭಯಭೀತನಾದ, நான் பயப்படுகிறேன்

चेहरे पे - मुख पर

❄

प्रसून जोशी

प्रसून जोशी का जन्म 16 सितंबर 1968 को अल्मोडा (उत्तराखंड) में हुआ। वे हिंदी कवि, लेखक, पटकथाकार और फिल्मी गीतकार हैं। वे अन्तर्राष्ट्रीय विज्ञापन कंपनी 'मैकऐन इरिक्सन' में कार्यकारी अध्यक्ष हैं। फ़िल्म 'तारे ज़मीन पर' का गाना ' मेरी माँ...' के लिए उन्हें ' राष्ट्रीय पुरस्कार ' भी प्राप्त हुआ है। वे पद्मश्री उपाधि से सम्मानित हैं।

इकाई चार

साथ चलें

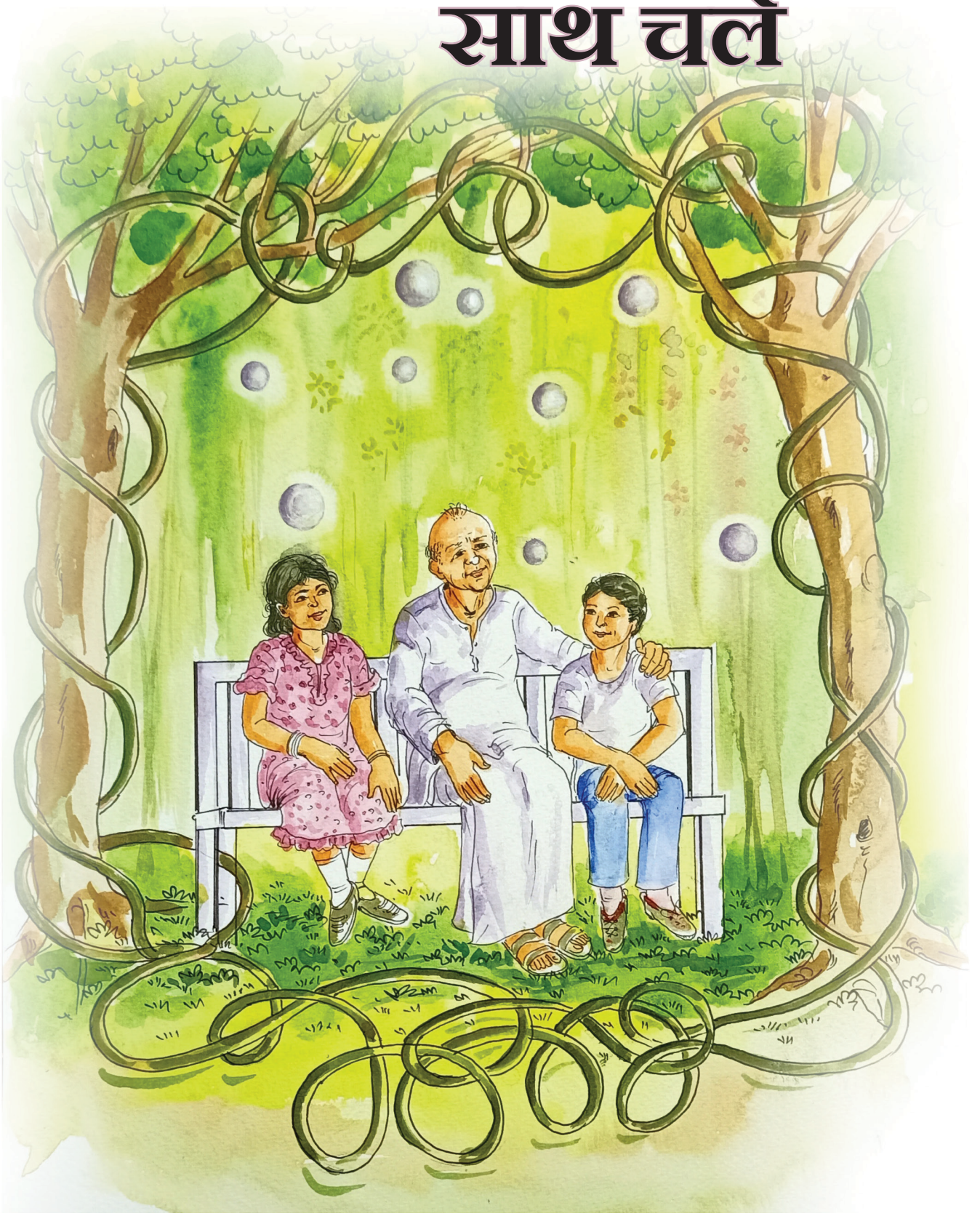

कहानी
(छात्रानुकूलित)

सयानी बुआ

मन्नू भंडारी

सब पर मानो बुआजी का व्यक्तित्व हावी है। सारा काम वहाँ इतनी व्यवस्था से होता जैसे सब मशीनें हों। ठीक पाँच बजे सब लोग उठ जाते, फिर एक घंटा बाहर मैदान में टहलना होता, उसके बाद चाय-दूध होता। उसके बाद अन्नू को पढ़ने के लिए बैठना होता, भाई साहब भी तब अखबार और ऑफिस की फइलें देखा करते। नौ बजते ही नहाना शुरू होता। जो कपड़े बुआजी निकाल दें वही पहनने होते, फिर कायदे से आकर मेज़ पर बैठ जाओ और खाकर काम पर जाओ।

सयानी बुआ का नाम वास्तव में ही सयानी था या उनके सयानेपन को देखकर लोग उन्हें सयानी कहने लगे थे, सो तो मैं आज भी नहीं जानती। बचपन में ही वे समय की जितनी पाबंद थीं, अपना सामान संभालकर रखने में जितनी पटु थीं और व्यवस्था की जितनी कायल थीं, उसे देखकर चकित हो जाना पड़ता था। कहते हैं जो पेंसिल वे एक बार खरीदती थीं वह जब तक इतनी छोटी न हो जाती कि उनकी पकड़ में भी न आए तब तक उससे काम लेती थीं।

जो रबड़ उन्होंने चौथी कक्षा में खरीदी थी, उसे नौवीं कक्षा में आकर समाप्त किया।

'जो रबड़ उन्होंने चौथी कक्षा में खरीदी थी, उसे नौवीं कक्षा में आकर समाप्त किया।' - यहाँ बुआ के चरित्र की कौन सी विशेषता प्रकट होती है?

उनकी एक-एक बात पिताजी हम लोगों के सामने उदाहरण के रूप में रखते थे जिसे सुनकर हम सभी खैर मनाया करते थे कि वे ससुराल में ही रहा करें, वरना हम जैसे अस्त-व्यस्त और अव्यवस्थित जनों का तो जीना ही हराम हो जाएगा। ऐसी ही सयानी बुआ के पास जाकर पढ़ने का प्रस्ताव जब मेरे सामने रखा गया तो मैंने साफ़ इनकार कर दिया। पर पिताजी मेरी पढ़ाई के विषय में इतने सतर्क थे कि उन्होंने समझाकर, डाँटकर और प्यार-दुलार से मुझे राज़ी कर लिया।

इसमें संदेह नहीं कि बुआजी ने बड़ा स्वागत किया, पर उनका जो रौद्र रूप मन पर छाया हुआ था, उसमें उनका वह प्यार कहाँ तिरोहित हो गया, मैं जान ही न पाई। हाँ, बुआजी के पति जिन्हें हम भाई साहब कहते थे, बहुत ही अच्छे स्वभाव के व्यक्ति थे। और सबसे अच्छा कोई घर में लगा तो उनकी पाँच वर्ष की पुत्री अन्नू। मुझे सबसे अधिक तरस आता था अन्नू पर। वह इस नन्ही-सी उम्र में ही प्रौढ़ हो गई थी। न बच्चों का-सा उल्लास, न कोई चहचहाहट, एक अज्ञात भय से वह घिरी रहती थी।

अन्नू नन्ही-सी उम्र में ही प्रौढ़ हो गई थी। -क्यों?

घर के उस वातावरण में मेरी भी सारी हँसी-खुशी मारी गई। यों बुआजी की गृहस्थी जमे पंद्रह वर्ष बीत चुके थे, पर उनके घर का सारा सामान देखकर लगता था, मानो सब कुछ अभी कल ही खरीदे थे। वे सारे बर्तन स्वयं खड़ी होकर साफ़ करवाती थीं। एक बार एक नौकर ने सुराही तोड़ दी थी। उस छोटे-से छोकरे को उन्होंने इस कसूर पर बहुत पीटा था। तोड़-फोड़ से तो उन्हें सख्त नफ़रत थी।

बुआजी की अत्यधिक सतर्कता और खाने-पीने के इतने कंट्रोल के बावजूद अन्नू को बुखार आने लगा। सब प्रकार के उपचार करने-कराने में पूरा महीना बीत गया, उसका बुखार न उतरा। उसे देखकर मुझे लगता कि उसके शरीर में ज्वर के कीटाणु नहीं, बुआजी के भय के कीटाणु दौड़ रहे हैं, जो उसे ग्रसते जा रहे हैं। आखिर डॉक्टरों ने राय दी कि बच्ची को पहाड़ पर ले जाया जाए और जितना अधिक प्रसन्न रखा जा सके, रखा जाए। भाई साहब के सामने एक विकट समस्या थी।

बुआजी के रहते यह संभव नहीं था, क्योंकि अनजाने ही उनकी इच्छा के सामने किसी और की इच्छा चल नहीं सकती थी। भाई साहब ने शायद सारी बात डॉक्टर के सामने रख दी, तभी डॉक्टर ने कहा कि माँ का साथ रहना ठीक नहीं होगा। बुआजी ने सुना तो बहुत आनाकानी की, पर डॉक्टर की राय के विरुद्ध जाने का साहस वे कर नहीं सकीं।

'बुआजी ने सुना तो बहुत आनाकानी की।' बुआजी के आनाकानी करने का कारण क्या होगा?

ज़ोर-शोर से अन्नू के पहाड़ जाने की तैयारी शुरू हुई। पहले दोनों के कपड़ों की लिस्ट बनी, फिर जूतों की, मोज़ों की, गरम कपड़ों की, ओढ़ने-बिछाने के सामान की, बर्तनों की। हर चीज़ रखते समय वे भाई साहब को सख्त हिदायत कर देती थी कि एक भी चीज़ खोनी नहीं चाहिए, "देखो यह फ्रॉक मत खो देना, सात रुपए मैंने इसकी सिलाई दी है। यह प्याले मत तोड़ देना, वरना पचास रुपए का सेट बिगड़ जाएगा।" प्रत्येक वस्तु की हिदायत के बाद वे अन्नू पर आई। वह किस

दिन, किस समय क्या खाएगी, कब कितना घूमेगी सब कुछ निश्चित कर दिया।

आखिर वह क्षण भी आ पहुँचा, जब भाई साहब एक नौकर और अन्नू को लेकर चले गए। बुआजी ने अन्नू को खूब प्यार किया, रोई भी। उनका रोना मेरे लिए नई बात थी। उस दिन पहली बार लगा कि उनकी भयंकर कठोरता में कहीं कोमलता भी छिपी है। भाई साहब का पत्र रोज़ आता था जिसमें अन्नू की तबीयत के समाचार रहते थे। बुआजी भी रोज़ एक पत्र लिखती थीं जिसमें अपनी उन मौखिक हिदायतों को लिखित रूप से दोहरा दिया करती थीं।

करीब एक महीने के बाद एक दिन भाई साहब का पत्र नहीं आया। दूसरे दिन भी नहीं आया। बुआजी बड़ी चिंतित हो उठीं। तीसरा दिन भी निकल गया। अब तो बुआजी की चिंता का पार नहीं रहा।

'अब तो बुआजी की चिंता का पार नहीं रहा।' बुआ की चिंता क्या रही होगी?

रात को वे मेरे कमरे में आकर सोईं, पर सारी रात दुस्वप्न देखती रहीं और रोती रहीं। वे बार-बार कहतीं कि उन्होंने स्वप्न में देखा है कि भाई साहब अकेले चले आ रहे हैं, अन्नू साथ नहीं है और उनकी आँखें लाल हैं। मैं तरह-तरह से उन्हें आश्वासन देती, पर बस वे तो कुछ सुन नहीं रही थीं। तभी नौकर ने भाई साहब का पत्र लाकर दिया। बड़ी व्यग्रता से, काँपते हाथों से उन्होंने उसे खोला और पढ़ने लगीं। एकाएक पत्र फेंककर, सर पीटती बुआजी चीखकर रो पड़ीं। मैं धक् रह गई, आँखों के आगे अन्नू की भोली सी तस्वीर घूम गई। तो क्या अब अन्नू सचमुच ही संसार में नहीं है? मैंने साहस करके भाई साहब का पत्र उठाया। लिखा था :

'प्रिय सयानी,

समझ में नहीं आता, किस प्रकार तुम्हें यह पत्र लिखूँ? किस मुँह से तुम्हें यह दुखद समाचार सुनाऊँ। फिर भी रानी, तुम इस चोट को धैर्यपूर्वक सह लेना। यह संसार नश्वर है। जो बना है वह एक-न-एक दिन मिटेगा ही। तुम्हारी इतनी हिदायतों के

यह संसार नश्वर है। बुआ के पति ने पत्र की शुरुआत में क्यों ऐसा उल्लेख किया होगा?

और अपनी सारी सतर्कता के बावजूद मैं उसे नहीं बचा सका, इसे अपने दुर्भाग्य के अतिरिक्त और क्या कहूँ। यह सब कुछ मेरे ही हाथों होना था...' आँसू भरी आँखों के कारण शब्दों का रूप अस्पष्ट से अस्पष्टतर होता जा रहा था और मेरे हाथ काँप रहे थे। मेरी आँखें शब्दों को पार करती हुई पत्र के अंतिम हिस्से

पर जा पड़ीं, ' धैर्य रखना रानी, जो कुछ हुआ उसे सहने की और भूलने की कोशिश करना। कल चार बजे तुम्हारे पचास रुपए वाले सेट के दोनों प्याले मेरे हाथ से गिरकर टूट गए। अन्नू अच्छी है। शीघ्र ही हम रवाना होने वाले हैं।'

एक मिनट तक मैं हतबुद्धि-सी खड़ी रही, समझ ही नहीं पाई यह क्या-से-क्या हो गया। ज्यों ही कुछ समझी, मैं ज़ोर से हँस पड़ी। किस प्रकार मैंने बुआजी को सत्य से अवगत कराया, वह सब मैं कोशिश करके भी नहीं लिख सकूँगी। पर वास्तविकता जानकर बुआजी भी रोते-रोते हँस पड़ीं। पाँच आने की सुराही तोड़ देने पर नौकर को बुरी तरह पीटने वाली बुआजी पचास रुपए वाले सेट के प्याले टूट जाने पर भी हँस रही थीं, मानो उन्हें स्वर्ग की निधि मिल गई हो।

❄

आगे...

- वाक्य पढ़ें, रेखांकित शब्दों की विशेषता पहचानें। कहानी से ऐसे वाक्य चुनकर लिखें।

- उम्र के साथ-साथ उनकी चतुराई भी प्रौढ़ता धारण करती गई।
- हम जैसे अस्त-व्यस्त और अव्यवस्थित लोगों का जीना ही हराम हो जाएगा।

पढ़ें, समझें...

- प्याले का सेट बिगड़ जाएगा।
- अन्नू पहाड़ में क्या खाएगी।
- बच्चे अपनी इच्छा के अनुसार क्या खाक करेंगे।

- नमूने के अनुसार बदलकर लिखें।

बच्चे स्कूल जाते हैं।	बच्चे स्कूल जाएँगे।
उमा आम खाती है।	
चंकू क्रिकट खेलता है।	
लड़कियाँ पेड़ पर चढ़ती हैं।	

- ' सयानी बुआ ' शीर्षक की सार्थकता पर टिप्पणी लिखें।

- कहानी के लिए एक अलग शीर्षक दें।

- इन वाक्यों के आशय पर चर्चा करें।

  - घरवालों के सारे काम मशीनों जैसी व्यवस्था से होते थे।
  - बुआ बचपन में ही अपने सामान संभालकर रखने में पटु थीं।
  - अन्नू को पहाड़ भेजते समय भी बुआ ने सख्त हिदायत दी।
  - बुआ की भयंकर कठोरता में कहीं कोमलता भी छिपी हुई थी।

- सयानी बुआ की चरित्रगत विशेषता पर टिप्पणी लिखें।

- अनुबद्ध कार्य

कहानी का वाचन करें और रेकॉर्ड करें।

मन्नू भंडारी

मन्नू भंडारी (3 अप्रैल 1931- 15 नवंबर 2021) हिंदी की प्रसिद्ध कथा लेखिका हैं। मध्यप्रदेश में मंदसौर जिले के भानपुरा गाँव में जन्मी मन्नू भंडारी के बचपन का नाम महेंद्र कुमारी था। लेखन के लिए उन्होंने मन्नू भंडारी नाम चुना था। उन्होंने एम ए तक की शिक्षा पाई और वर्षों तक दिल्ली के मिरांडा हाउस में अध्यापिका रहीं। 'आपका बंटी', ' महाभोज ' आदि उनके बहुचर्चित उपन्यास हैं। 'यही सच है', 'मैं हार गई', 'एक प्लेट सैलाब' जैसे आठ कहानी संग्रह प्रकाशित हैं। आपको सन् 2007 में 'व्यास सम्मान' प्राप्त हुआ।

मदद लें...

सयानी -चतुर

बुआ -पिता की बहन

हावी -प्रभावी

व्यवस्था से -ചിട്ടയായി, in order, ஒழுங்காக, ವ್ಯವಸ್ಥಿತವಾಗಿ

टहलना -ഉലാത്തുക, to stroll, உலவுதல், ತಲ್ಲೀನ

कायदे से -निष्ठा के साथ

पाबंद -अनुशासित

पटु -निपुण

कायल थीं - ध्यान देने वाली थीं

खैर मनाया करते थे - भलाई चाहते थे

ससुर -पति के पिता

ससुराल -ससुर का घर

वरना -नहीं तो

अस्त-व्यस्त -जो ठीक क्रम से न हो

जीना ही हराम हो जाएगा - जीना भारी हो जाएगा

प्रस्ताव -നിർദ്ദേശം suggestion, அறிவுரை, ಸಲಹೆ

साफ इनकार कर दिया -साफ अस्वीकार कर दिया

सतर्क -जागरूक

प्यार-दुलार से -वात्सल्यपूर्वक

राज़ी कर लिया -मान लिया

रौद्र रूप -क्रोधपूर्ण रूप

तिरोहित -अप्रत्यक्ष

तरस आता था -दया आती थी

उमर -उम्र

प्रौढ़ हो गई थी -പക്വത നേടിക്കഴിഞ്ഞിരുന്നു, became mature, பக்குவம்அடைதல் ಪ್ರೌಢಾವಸ್ಥೆಗೆ ಬರು

भय से घिरी रहती थी -भयभीत रहती थी

सुराही -കൂജ Water Pot, கூஜா, ಹೂಜಿ

छोकरा -लड़का

कसूर -अपराध

तोड़-फोड़ से -किसी चीज़ को नष्ट करने से

सख्त नफ़रत -कड़ी घृणा

सतर्कता -जागरूकता alertness எச்சரிக்கை, ಜಾಗರೂಕತೆ

के बावजूद -के होने पर भी

आनाकानी की -കേട്ടില്ലെന്നു നടിച്ചു, pretended not to hear
கேட்காதது போல் இருத்தல்.
ಕೇಳಲಿಲ್ಲ ಎಂದು ನಟಿಸು

ज़ोर-शोर से -जल्दबाज़ी से

ग्रसते जा रहे हैं -सता रहे हैं

बुखार -ज्वर, fever,
ജ്വര, காய்ச்சல்

मोज़ा -stockings, காலுறை

सख्त हिदायत -कड़ा निर्देश

खोनी नहीं चाहिए -नष्ट नहीं होनी चाहिए

प्याला -കപ്പ്, cup,
குவளை, ಗ್ಲಾಸ್

मत तोड़ देना -പൊട്ടിക്കരുത്,
do not break,
உடைக்கக்கூடாது,
ತುಂಡು ಮಾಡಬಾರದು

चीखकर रो पड़ी -അലറിക്കരഞ്ഞു,
cried out
ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಕೂಗು,
அலறுதல்

धक् रह गई -स्तब्ध रह गई

सचमुच -वास्तव में

दोहरा देना -आवृत्ति करना, to repeat,
மீண்டும் செய்தல்,
ಆವರ್ತಿಸು

व्यग्रता -व्याकुलता

एकाएक -പെട്ടെന്ന്, suddenly
திடீரென, ಪಕ್ಕನೆ

एक-न-एक दिन -किसी भी दिन

अस्पष्ट से अस्पष्टतर होता जा रहा था -अस्पष्टता बढ़ती जा रही थी

आँखें शब्दों को पार करती हुई -अतिशीघ्र पढ़ती हुई

अंतिम हिस्सा -अंतिम भाग

रवाना होने वाले हैं -പുറപ്പെടും,
will start
ಹೊರಡಲಿರುವುದು,
புறப்படுதல்

हतबुद्धि-सी -बुद्धि खोई हुई जैसी

क्या-से-क्या हो गया -अप्रत्याशित कार्य हो गया

सत्य से अवगत कराना-सत्य समझा देना

रोते-रोते हँस पड़ीं -दुख खुशी में बदल गया

कविता

चौक

आलोक धन्वा

उन स्त्रियों का वैभव मेरे साथ रहा
जिन्होंने मुझे चौक पार करना सिखाया
मेरे मोहल्ले की थीं वे
हर सुबह काम पर जाती थीं
मेरा स्कूल उनके रास्ते में पड़ता था
माँ मुझे उनके हवाले कर देती थी
छुट्टी होने पर मैं उनका इंतज़ार करता था
उन्होंने मुझे इंतज़ार करना सिखाया

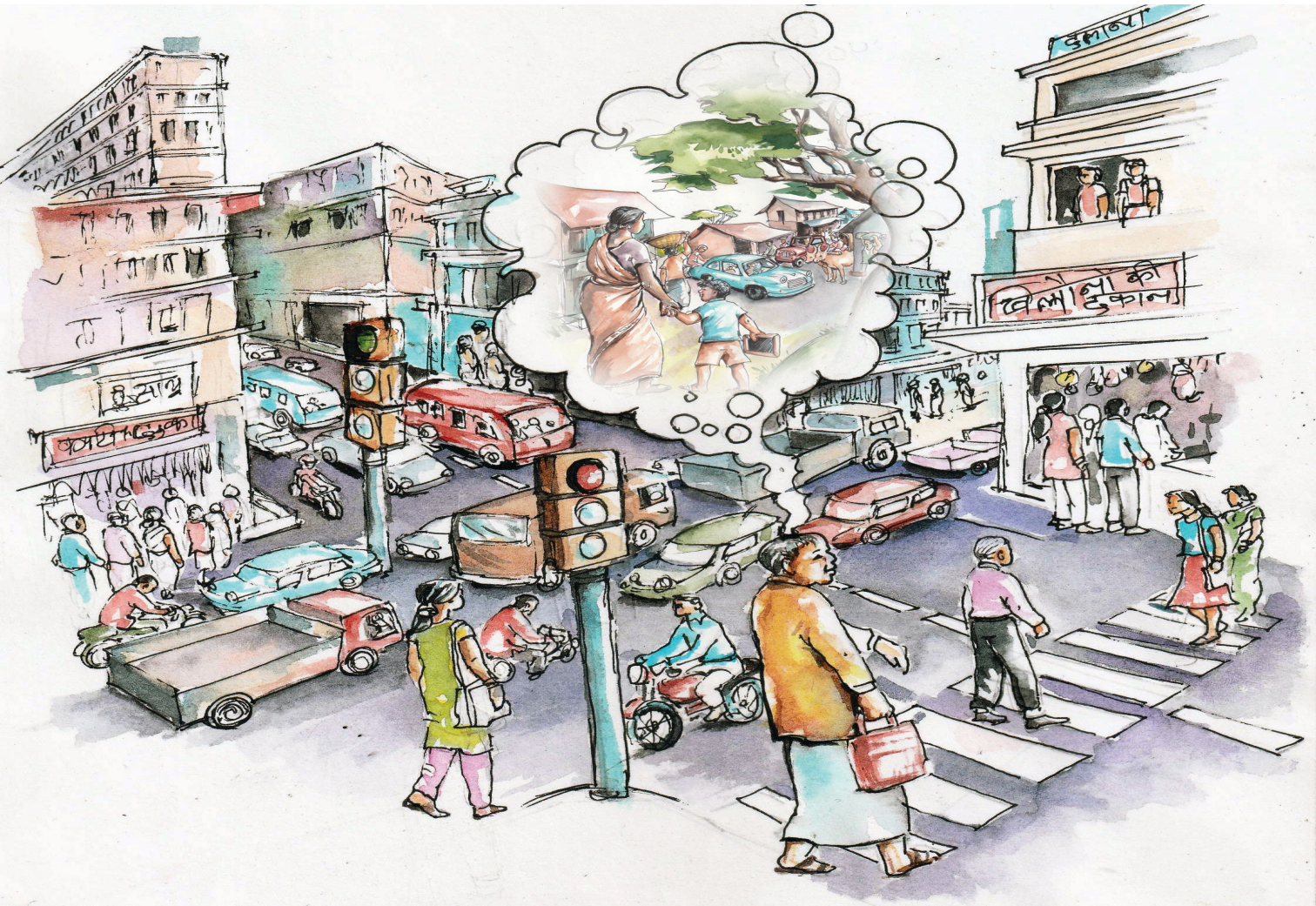

कस्बे के स्कूल में
मैंने पहली बार दाखिला लिया था
कुछ दिनों बाद मैं
खुद ही जाने लगा
और उसके भी कुछ दिनों बाद
कई लड़के मेरे दोस्त बन गए
तब हम साथ-साथ कई दूसरे रास्तों से भी
स्कूल आने-जाने लगे

लेकिन अब भी
उन थोड़े-से दिनों के कई दशकों बाद भी
जब कभी मैं किसी बड़े शहर के
बेतरतीब चौक से गुज़रता हूँ
उन स्त्रियों की याद आती है

'बड़े शहर के बेतरतीब चौक'
- कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा ?

और मैं अपना दायाँ हाथ उनकी ओर
बढ़ा देता हूँ और
बाएँ हाथ से उस स्लेट को संभालता हूँ
जिसे मैं छोड़ आया था
बीस बरसों के अखबार के पीछे

बीस बरसों के अखबार के पीछे छोड़ आया था - इस कथन का तात्पर्य क्या है ?

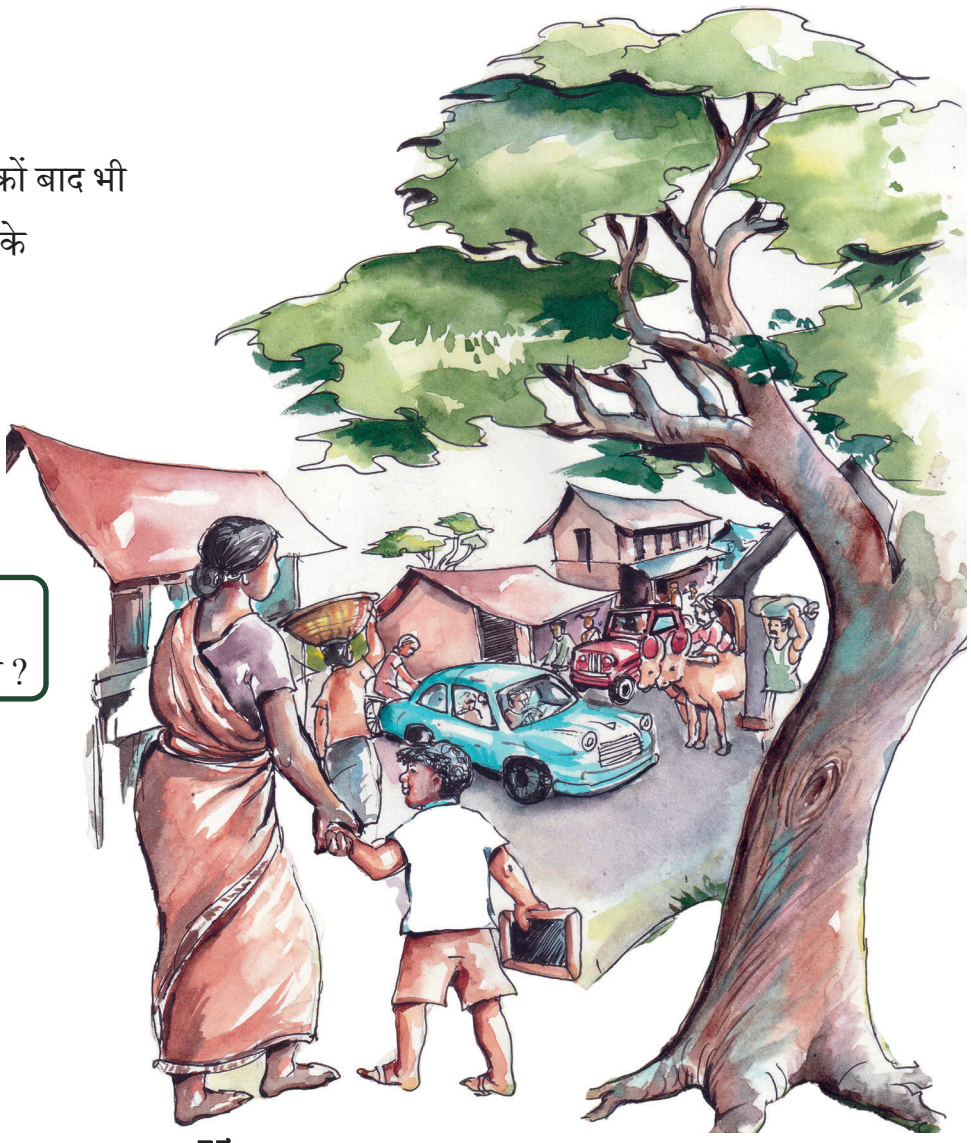

आगे...

- **सही मिलान करें।**

इंतज़ार करना	सौंप देना
हवाले करना	प्रवेश करना
दाखिला लेना	उपेक्षित करना
छोड़ आना	प्रतीक्षा करना

- **समान आशय वाली पंक्तियाँ चुनकर लिखें।**

* उन महिलाओं ने मुझे कठिनाइयों को पार करने में मदद दी।
* छोटे शहर के स्कूल में मेरी भर्ती हुई।
* अस्त-व्यस्त चौराहों को पार करते समय मुझे उन स्त्रियों की याद आती है।
* स्त्रियों ने मुझे प्रतीक्षा करना सिखाया।

- **इन प्रसंगों के चित्र खींचें, शीर्षक दें और प्रदर्शनी चलाएँ।**

  • बच्चे को चौक पार करने में सहारा देने वाली स्त्रियाँ।
  • बच्चे को स्त्रियों के हवाले करने वाली माँ।
  • अकेले फाटक पार करते हुए स्कूल पहुँचने वाला बच्चा।
  • दोस्तों के साथ सड़क पार करके स्कूल जाने वाला बच्चा।

- **कविता का आशय लिखें।**

- **अनुबद्ध कार्य**

स्कूली स्मृतियों पर लिखी गई कविताएँ/ कहानियाँ संकलित करें।

सुरक्षा न केवल एक नारा
बल्कि है यह जीवन की एक धारा

- **कुछ सड़क चिह्नों को पहचानें।**

चौक (चौराहा)	
यातायात संकेतक	
पैदल क्रॉसिंग	

- **लिखें, ये चिह्न किसकी सूचना देते हैं।**

	.....
	.....
	.....

मदद लें...

वैभव - महत्व

चौक - നാൽക്കവല, Junction, ಸಂಗಮ ಸ್ಥಳ, சந்திப்பு
वह स्थान जहाँ से चारों ओर रास्ते जाते हैं

पार करना - दूसरे किनारे पहुँचना

मोहल्ला - തെരുവ്, Street, ಗಲ್ಲಿ, தெரு, टोला

हवाले करना - किसीके हाथ में सौंपना

इंतज़ार करना - प्रतीक्षा करना

कस्बा - एक प्रकार का छोटा शहर
township

दाखिला लिया - प्रवेश लिया

खुद - स्वयं

थोड़े से - अल्प

दशक - दस वर्षों का समूह

बेतरतीब - നിയന്ത്രണമില്ലാത്ത uncontrollable, ಅನಿಯಂತ್ರಿತ, கட்டுப்பாடில்லாத

चौक से गुज़रना - चौक को पार करना

दायाँ हाथ - വലത് കൈ right hand, வலது கை ಬಲದ ಕೈ

संभालता हूँ - ചേർത്ത് പിടിക്കുന്നു hold on பிடித்துக் கொள்ளுதல், ತಬ್ಬಿಕೊಂಡಿರು ವುದು

अखबार - दैनिक समाचार पत्र

आलोक धन्वा का जन्म 2 जुलाई 1948 में बिहार के मुंगेर जिले में हुआ। आपकी पहली कविता 'जनता का आदमी' सन् 1972 में प्रकाशित हुई । 'दुनिया रोज़ बनती है' (1998) आपका कविता संग्रह है। 'चौक' इस संग्रह की कविता है। आपको पहल सम्मान, राहुल सम्मान, नागार्जुन सम्मान, फिराक गोरखपुरी सम्मान, गिरिजाकुमार माथुर सम्मान, भवानी प्रसाद मिश्र सम्मान, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद का सम्मान आदि प्राप्त हुए।

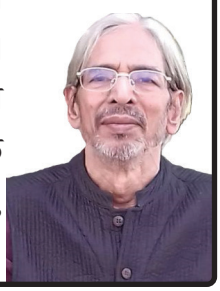

विशेष दिवस

दिसंबर और जनवरी महीनों के विशेष दिवसों को पहचानें और सूचीबद्ध करें।

इकाई पाँच

गुज़रते पल

कविता

खुशबू रचते हैं हाथ

अरुण कमल

कई गलियों के बीच
कई नालों के पार
कूड़े-करकट
के ढेरों के बाद
बदबू से फटते जाते इस
टोले के अंदर
खुशबू रचते हैं हाथ
खुशबू रचते हैं हाथ।

' बदबू से फटते जाते इस
टोले के अंदर
खुशबू रचते हैं हाथ '
- इससे कवि का तात्पर्य क्या होगा?

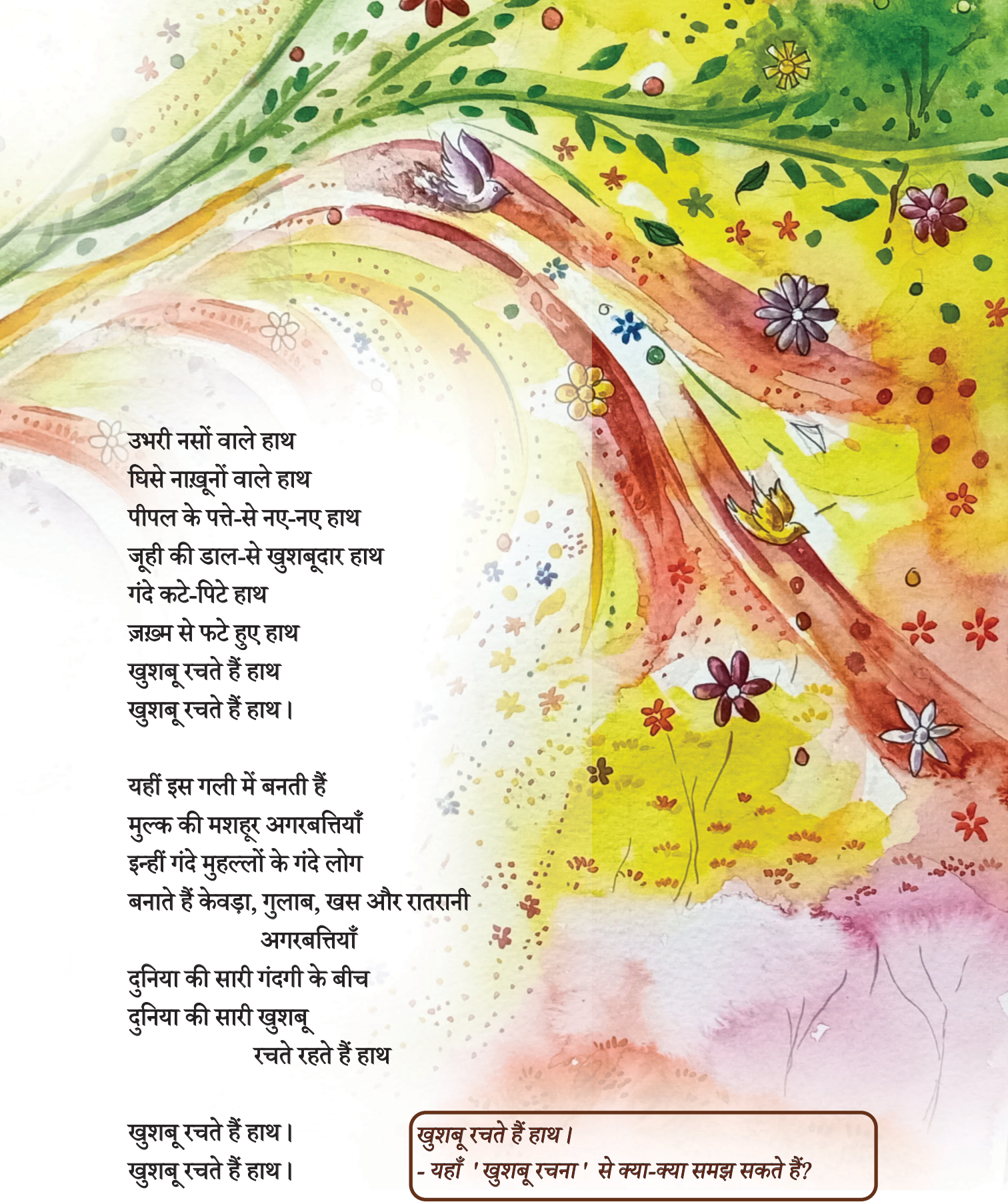

उभरी नसों वाले हाथ
घिसे नाख़ूनों वाले हाथ
पीपल के पत्ते-से नए-नए हाथ
जूही की डाल-से खुशबूदार हाथ
गंदे कटे-पिटे हाथ
ज़ख़्म से फटे हुए हाथ
खुशबू रचते हैं हाथ
खुशबू रचते हैं हाथ।

यहीं इस गली में बनती हैं
मुल्क की मशहूर अगरबत्तियाँ
इन्हीं गंदे मुहल्लों के गंदे लोग
बनाते हैं केवड़ा, गुलाब, खस और रातरानी
अगरबत्तियाँ
दुनिया की सारी गंदगी के बीच
दुनिया की सारी खुशबू
रचते रहते हैं हाथ

खुशबू रचते हैं हाथ।
खुशबू रचते हैं हाथ।

खुशबू रचते हैं हाथ।
- यहाँ 'खुशबू रचना' से क्या-क्या समझ सकते हैं?

आगे...

खुशबू रचते हाथों वाला मुहल्ला कहाँ-कहाँ बसता है?

-
-
-

खुशबू रचने वाले हाथों की विशेषताएँ क्या-क्या हैं ?

-
-
-

पढ़ें और लिखें...

' दुनिया की सारी गंदगी के बीच
दुनिया की सारी ख़ुशबू
रचते रहते हैं हाथ '
- इन पंक्तियों पर विचार करें।

' यहीं इस गली में बनती हैं
मुल्क की मशहूर अगरबत्तियाँ '
- इन पंक्तियों का आशय क्या है ?

सोचें और लिखें, ये हाथ किन-किनके होंगे ?

उभरी नसों वाले हाथ	- गरीबी से सूखे आदमियों के
घिसे नाखूनों वाले हाथ	
पीपल के पत्ते से नए-नए हाथ	
जूही की डाल से खुशबूदार हाथ	
गंदे कटे-पिटे हाथ	
जख्म से फटे हुए हाथ	

कड़ी मेहनतियों के
बड़ों के
लड़कियों के
बच्चों के
मेहतरों के

» मज़दूर वर्ग के लोग ही इस दुनिया को सुंदर और खुशबूदार बनाते हैं। क्या, इससे आप सहमत हैं ? समर्थन करें।

» कविता में प्रयुक्त शब्द 'खुशबू' सिर्फ खुशबू नहीं है। विचार करें और लिखें, यहाँ खुशबू और क्या-क्या हो सकती है ?

- **'खुशहाल समाज के निर्माण में मज़दूर वर्ग की भूमिका' विषय पर 'खुशबू रचते हैं हाथ' कविता के आधार पर लेख लिखें।**

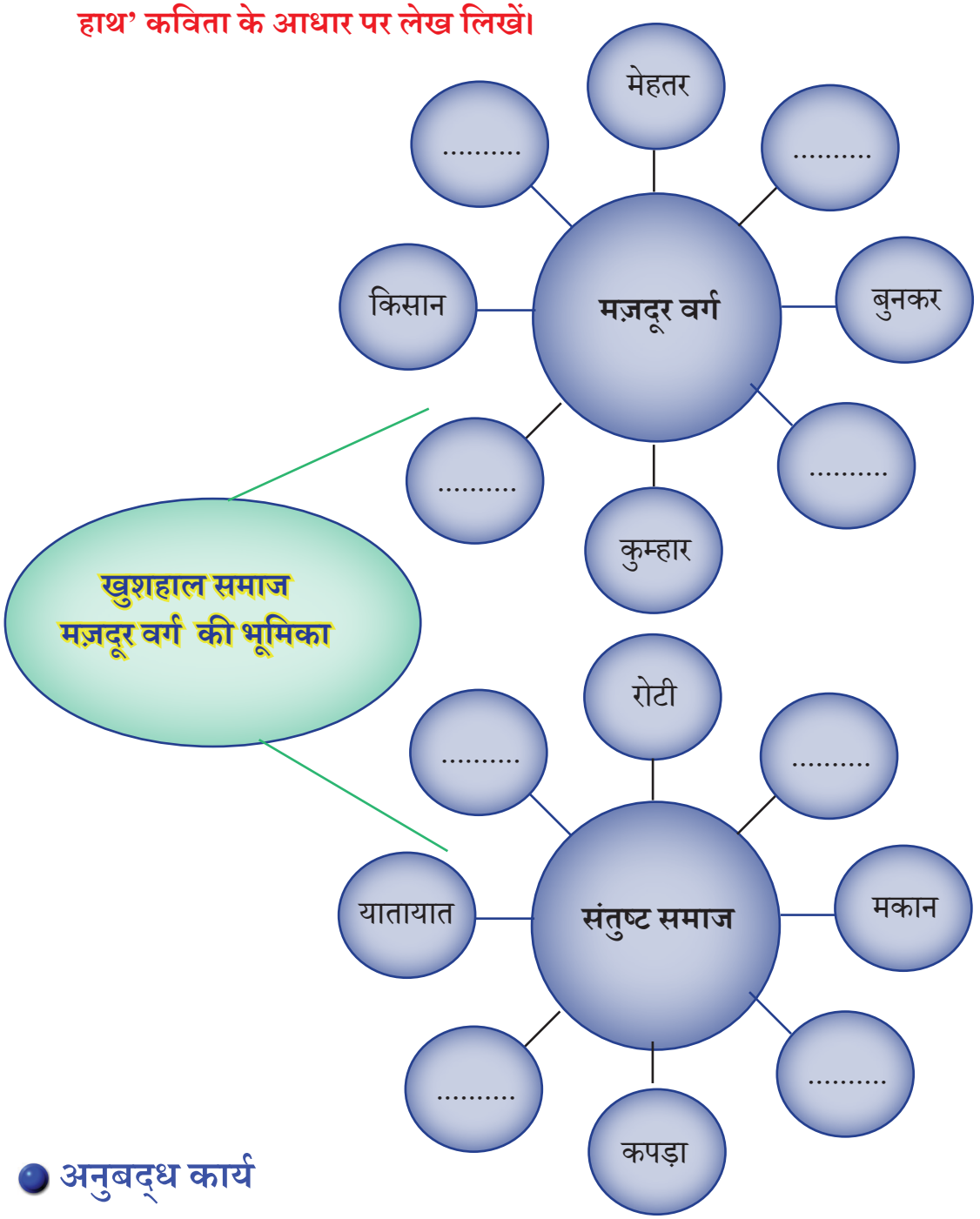

अनुबद्ध कार्य

- अपने इलाके के कुछ मज़दूरों और उनके कामों को सूचीबद्ध करें और कक्षा के संकलन में जोड़ें।
- कविता की आस्वादन टिप्पणी लिखें।

मदद लें...

गली - तंग रास्ता

नाला - घरों और सड़कों के किनारे गंदा पानी बहने का मार्ग

कूड़ा-करकट - कचरा

ढेर - കൂമ്പാരം, heap, ರಾಶಿ, குவியல்

टोले के अंदर - छोटी बस्ती के भीतर

उभरी - प्रकट हुई

नस - നാഡി, nerve, ನಾಡಿ, நரம்பு

घिसे नाखून - തേഞ്ഞ നഖങ്ങൾ, worn out nails, ಸವೆದ ಉಗುರುಗಳು, தேய்ந்த நகங்கள்

ज़ख़्म - മുറിവ്, wound, ಗಾಯಂ, புண்

मुल्क - देश

अगरबत्ती - सुगंध के लिए जलाने की बत्ती

मशहूर - प्रसिद्ध

केवड़ा - കൈതപ്പൂവ്, screw pine flower, ಕೇದಗೆ ಹೂ, கைதப்பூ

खस - രാമച്ചം khus roots ರಾಮಚ್ಚ, ராமிச்சம்

रातरानी - നിശാഗന്ധി, ರಾತ್ರಿ ರಾಣಿ (ಹೂ), நிஷாகந்தி பூ

❄

अरुण कमल

अरुण कमल का जन्म 15 फरवरी 1954 को बिहार में हुआ। वे हिंदी साहित्य के समकालीन कवि हैं जो प्रगतिशील विचारधारा से संपन्न हैं। उनका वास्तविक नाम अरुण कुमार है। उनका पहला कविता संग्रह ' अपनी केवल धार ' 1980 में प्रकाशित हुआ। 1989 में उनका दूसरा संग्रह ' सबूत ' प्रकाशित हुआ और 1996 में तीसरा संग्रह ' नए इलाके में', जिसके लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस संग्रह की दूसरी कविता है ' खुशबू रचते हैं हाथ '।

संस्मरण

सीरिया की बेटी

मैत्रेयी कुलकर्णी

टर्की का वह एयरपोर्ट ठसाठस था। इसी भीड़ में मैं फ्लाइट के इंतज़ार में छह-सात घंटे बिता चुकी थी। मुझे समझ आने लगा था कि जगह तो इस फ्लाइट में भी नहीं मिलने वाली है। और अगली फ्लाइट चौबीस घंटे बाद मिलेगी। इस फ्लाइट में पहले से ही कुछ न कुछ अड़चनें आ रही थीं। टर्की आने-जाने में नौ-दस घंटे लगते हैं। इस बार पूरा एक दिन लग गया था। मेरे पूरे शरीर में टूटन थी। अकड़ गया था। एक अनिश्चितता बनी हुई थी। इसीने थकान को और बढ़ा दिया था। अजब-सी बोरियत ने मुझे घेर लिया था। ऊपर से विमान लेट पर लेट होता जा रहा था। मेरे पास टर्की का वीज़ा भी नहीं था कि कहीं बाहर जाकर घूम ही आऊँ।

मुझे चौबीस घंटे गुज़ारने थे। फोन की बैटरी खतम हो गई थी। उसपर इंटरनेट भी काम नहीं कर रहा था कि घर पर आई-बाबा को बता दूँ कि मैं यहाँ इस एयरपोर्ट में बैठी हूँ। मैंने वहीं आस-पास की दुकानों पर वाई-फाई के बारे में तफ़तीश की। मगर कोई रास्ता न निकला। अब विमान के आने का इंतज़ार

यहाँ 'अजब-सी बोरियत' का प्रयोग क्यों किया होगा?

करने के अलावा मेरे पास कोई चारा नहीं था। इसी समय मैंने पानी पीने के लिए बोतल की तरफ़ हाथ बढ़ाया तो पाया कि बोतल में पानी नहीं था।

लेखिका अपने बाबा से फोन पर बातें करने में असमर्थ थी। उस समय लेखिका के मन में क्या-क्या सोच आए होंगे ?

चार-पाँच दुकानों के बीच एक छोटा कैफे दिखाई दिया। मैंने वहाँ से पानी की एक बोतल उठा ली। पैसे देने के लिए काउण्टर के पास गई तो पता चला कि मेरा कार्ड नहीं चलेगा। अच्छा हुआ कि मैंने तब तक बोतल खोली नहीं थी। मैंने उसे दूसरा कार्ड पेश किया। वह भी नहीं चला। मेरे पास तो उतना कैश भी नहीं था। मैंने सोचा चलो, पानी नहीं पीते। मैंने बोतल वापिस दुकान पर रखी और यह सोचते-सोचते वापिस चलने लगी कि मैंने यात्रा के लिए यही दिन क्यों चुना। मैं एक जगह बैठ गई। सोचती रही और यहाँ-वहाँ देखती रही।

"मैंने यात्रा के लिए यही दिन क्यों चुना?" - लेखिका के ऐसे सोचने का क्या कारण हो सकता है ?

इतने में मुझे लगा, जैसे मेरे कंधे पर किसीने हाथ रखा। मैंने मुड़के देखा। मेरे पीछे एक लड़की खड़ी थी। बेहद सुंदर। ओवरकोट पहने। उसका चेहरा भर खुला था। वह एक सफेद बुरका पहने थी। वह शांत थी और उसकी आँखों में एक हँसी थी। इस हँसी पर एक क्षण के लिए मैं सब भूल गई। उसने अपनी पानी की बोतल मेरी तरफ़ बढ़ाई।

"टेक इट, इट्स फॉर यू।" उसने कहा।

'इस हँसी पर एक क्षण के लिए मैं सब भूल गई।' -लेखिका को ऐसा अनुभव क्यों हुआ ?

मुझे सूझा नहीं कि क्या बोलूँ। मैं सिर्फ हँसकर 'थैंक्यू' बोली । पानी का एक घूँट लिया। पानी के उस घूँट ने और उसकी हँसी ने या दोनों ने मिलकर मुझे एक मीठे अहसास से भर दिया था । मैं उसीके साथ जाकर बैठ गई। उसके बाजू में एक छोटा बच्चा था । उसकी आँखें कलियों की तरह उभरी हुई थीं । उसने भी एक ओवरकोट पहना था । उसकी आँखें अनवरत इधर-उधर देखती डोल रही थीं ।

'पानी के उस घूँट ने और उसकी हँसी ने या दोनों ने मिलकर मुझे एक मीठे अहसास से भर दिया था।' - इस प्रस्ताव से आपने क्या समझा?

मैंने यूँ ही पूछा कि आप कहाँ जा रही हैं? वह बोली, ' सीरिया जा रही हूँ। अपने माता-पिता के पास।' इस जगह का नाम सुनते ही मेरे माथे पर बल पड़ गए। ऐन युद्ध के समय यह वहाँ क्यों जा रही है ? क्या कोई ऐसे जाता है ? शायद यह सवाल मेरे चेहरे पर झलक उठा था।

ऐन युद्ध के समय यह वहाँ क्यों जा रही है ? यह सवाल मेरे चेहरे पर झलक उठा था। -लेखिका ने ऐसा क्यों सोचा होगा ?

वह बोली कि माँ की तबियत ठीक नहीं है। मैं जाऊँगी तो कुछ मदद हो जाएगी। मैं जो भी सोच रही थी वह जानती चली जा रही थी। मेरे बिना कुछ पूछे वह बता रही थी तो सोचा और बात करूँ। उसके आजू-बाजू के शहरों में युद्ध का शोर था। उसकी माँ का शहर यूँ तो सुरक्षित था। शांत था पर वहाँ भी डॉक्टर के पास जाना मुश्किल काम था। वहाँ के लोग एक डर के साए में जी रहे थे। जाने कहाँ, कब, क्या हो जाएगा कल्पना नहीं कर सकते थे। अपना घर-बार छोड़कर बाहर जाना तो और मुश्किल था। मगर उसने फिर भी तय किया कि वह माँ-पिता के पास जाएगी। विमान तो छोड़ो टैक्सी या बस की यात्रा भी सुरक्षित नहीं बची थी।

एक अजनबी के सामने वह यह सब बोल रही थी। मैं इसे समझने की कोशिश कर रही थी। और मुझे यह सुनकर अच्छा ही लग रहा था। उसकी मुश्किलों के आगे मेरे विमान के लेट होने वाली समस्या चींटी के बराबर लगने लगी। मुझे तो सिर्फ चौबीस घंटे देर से आने वाली फ्लाइट की चिंता थी। और जब मुंबई पहुँचूँगी तो एक टैक्सी वहाँ मेरा इंतज़ार कर रही होगी। बाबा घर पर ही मेरे इंतज़ार में रुकने वाले थे। माँ ने घर पर गरम-गरम पोहा तैयार कर रखा होगा। मेरा सवाल चौबीस घंटे का था, पर उसका ?

" मेरा सवाल चौबीस घंटे का था, पर उसका?" - इस कथन की गहराई पर अपना विचार प्रकट करें।

ऊपर से उसके साथ एक छोटा-सा बच्चा है। वह युद्ध के मुँह में जा रही है। अपने माँ-पिता का ख्याल रखने। इन सबके बावजूद वह इतनी शांत थी कि मेरा कार्ड न चला तो उसने मुझे पानी पेश किया।

कुछ दिनों बाद उसी शहर की युद्ध की खबरें आने लगीं। गिरते घर और जलती इमारतों की फोटो आने लगीं। यानी अब उसका शहर भी सुरक्षित नहीं रह गया था।

मेरी आँखों में उसके छोटे-से बच्चे की आँखें झूल गईं। मैंने सोचा, ऐसे कितने ही बच्चे वहाँ होंगे और कितनी ही बेटियाँ होंगी। अपने माँ-पिता का ख्याल रखने। और कितने ही होंगे जो चाहकर नहीं जा पाए होंगे। और कितने पहुँच ही न पाए होंगे।

मैंने युद्ध को पहली बार इतने करीब से जाना था। यूँ तो युद्ध की हर कहानी ही बेचैन करने वाली होती है, मगर इस कहानी ने तो मेरे मन में ही घर कर लिया था।

'मैंने पहली बार युद्ध को इतने करीब से जाना था।' - लेखिका ऐसा क्यों सोचती हैं ?

आगे...

- **सही मिलान करें।**

छोटे बच्चे की आँखें	बेचैन करने वाली होती है।
युद्ध की हर कहानी	डर के साये में जीते थे।
युद्ध के समय सीरिया के लोग	कलियों की तरह उभरी हुई थीं।

- **निम्नलिखित वाक्य पढ़ें और प्रत्येक वाक्य के आधार पर लड़की के मनोभाव लिखें।**

- उसने अपनी पानी की बोतल मेरी तरफ़ बढ़ाई। "टेक इट, इट्स फॉर यू।"
- 'सीरिया जा रही हूँ। अपने माता-पिता के पास।'
- वह बोली कि माँ की तबियत ठीक नहीं है। मैं जाऊँगी तो कुछ मदद हो जाएगी।

- **वाक्यों का विश्लेषण करें।**

मेरे शरीर में टूटन थी।

मेरे पूरे शरीर में टूटन थी।

उचित शब्द जोड़कर वाक्यों का पुनर्लेखन करें।

वह एक बुरका पहने थी।
उसके बाजू में एक बच्चा था।
माँ ने घर पर पोहा तैयार कर रखा होगा।
गिरते घर और इमारतों की फोटो आने लगीं।

जलती
सफेद
छोटा
गरम-गरम

- युद्ध से बनी अनिश्चितता में लेखिका को टर्की एयरपोर्ट में एक दिन घंटों गुज़रना पड़ा। उस दिन के अनुभवों के आधार पर लेखिका डायरी लिखती हैं।
  - लेखिका की वह डायरी कल्पना करके लिखें।

- सीरिया जाने वाली लड़की की चरित्रगत विशेषताओं पर टिप्पणी लिखें।

अनुबद्ध कार्य

'युद्ध की हर कहानी ही बैचैन करने वाली होती है।'
युद्ध के विरुद्ध नारा बनाएँ।

' मैंने पहली बार युद्ध को इतने करीब से जाना था।' -
यहाँ युद्ध के क्या-क्या चित्र आपके मन में आते हैं ?
- युद्ध पर विवरण लिखें।

संस्मरण के आधार पर सही प्रस्ताव चुनकर लिखें।

- विमान लेट होने पर लेखिका एयरपोर्ट के बाहर घूमने निकली।
- फोन की बैटरी खतम हो जाने से लेखिका माँ-बाप से संपर्क नहीं कर सकी।
- पैसा न होने के कारण लेखिका ने पानी की बोतल वापस दुकान पर रखी।
- सफ़ेद बुर्का पहनी लड़की ने पानी की बोतल लेखिका को दी।
- माँ-बाप की देखभाल के लिए युद्ध के समय पर भी लड़की सीरिया के अपने घर जा रही थी।

विशेष दिवस

फरवरी और मार्च महीनों के विशेष दिवसों को पहचानें। कम से कम पाँच विशेष दिवसों को सूचीबद्ध करें।

मदद लें...

ठसाठस - തിക്കിനിറച്ച, crowded, ತುಂಬಿ ತುಳುಕಿದ, மக்கள் கூட்டம்

अड़चनें - बाधाएँ

टूटन - दुर्बलता

अकड़ गया था - तन गया था

थकान - ക്ഷീണം, tiredness ಆಯಾಸ, சோர்வு

अजब - विचित्र

बोरियत - ऊबने की स्थिति

घेर लिया था - വളഞ്ഞു, encircled, ಸುತ್ತುವರಿಯು, சுற்றிவருதல்

वीज़ा - visa

आई-बाबा - माता -पिता

तफ़तीश की - तलाश की

बोतल - കുപ്പി bottle
ಬಾಟಲಿ, குப்பி

वापिस - वापस

बाजू - बाँह

बेहद - बहुत अधिक

सूझा नहीं - ध्यान में नहीं आया

पानी का एक घूँट - ഒരു കവിൾ വെള്ളം
A mouthful of water
ಒಂದು ಗುಟುಕುನೀರು,
வாய் நிறைய
தண்ணீர்

अहसास - अनुभव

बाजू में - बाँह में

अनवरत - निरंतर

यूँ - यों (इस प्रकार)

माथे पर बल पड़ गए - असंतोष के लक्षण प्रकट हुए

आजू-बाजू - अगल-बगल

शोर - ज़ोरों की आवाज़

साए में - छाया में

घर-बार - निवास स्थान

तय किया - निश्चय किया

अजनबी - अपरिचित

देर से - विलंब से

पोहा - അവിൽ കൊണ്ടുണ്ടാക്കുന്ന പലഹാരം
A food item made with flattened rice
ಅವಲಕ್ಕಿಯಿಂದ ತಯಾರಿಸಿದ ತಿಂಡಿ,
அவல் பலகாரம்

ख्याल रखने - ध्यान रखने

के बावजूद - के होने पर भी

इमारत - मकान

बेचैन करने वाली - व्याकुल करने वाली

मन में ही घर कर लिया था। - दिल को छू लिया था।

❄

मैत्रेयी कुलकर्णी

मैत्रेयी कुलकर्णी का जन्म 2 दिसंबर 1988 को पूना में हुआ। वे अमेरिका के एक विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं। उन्हें गणित और यात्रा बहुत पसंद हैं। उनको अमेरिका के विश्वविद्यालय से डॉक्टरी उपाधि प्राप्त हुई। इस दौरान दुनिया में घूमने और विभिन्न संस्कृति वाले लोगों को समझने का अवसर मिला। उन्होंने अपनी रचनाओं में इन बातों को शामिल किया है।

भारत का संविधान

भाग 4 क

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य-

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे,

ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे,

ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और अक्षुण्ण बनाए रखे,

घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे,

ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेद-भावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे, जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों,

च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उनका परिरक्षण करे,

छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्यजीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे,

ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे,

झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे,

ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके, और

ट) छह और चौदह साल के बीच के अपने बच्चे/बच्ची को या अपने संरक्षण में रहनेवाले बच्चे / बच्ची को उसके माता-पिता या अभिभावक तदनुकूल शिक्षा प्रदान करने का अवसर दें।

बच्चों के हक

प्यारे बच्चो,

क्या आप जानना चाहेंगे कि आपके क्या-क्या हक हैं? अधिकारों का ज्ञान आपको सहभागिता, संरक्षण, सामाजिक नीति आदि सुनिश्चित करने की प्रेरणा तथा प्रोत्साहन देगा। आपके अधिकारों के संरक्षण के लिए अब एक आयोग हैं– 'केरल राज्य बालाधिकार संरक्षण आयोग'। देखें, आपके क्या-क्या हक हैं–

- **अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हक**
- **व्यक्तिगत स्वतंत्रता के साथ जीने का हक**
- **उत्तर जीवन एवं सर्वांगीण विकास का हक**
- **धर्म, जाति, वर्ग एवं वर्ण की संकीर्णता के परे आदर पाने एवं मान्यता प्राप्त करने का हक**
- **मानसिक, शारीरिक एवं लिंगपरक अतिक्रमण से परिरक्षण पाने का हक**
- **भागीदारी का हक**
- **बालश्रम से एवं खतरनाक पेशों से मुक्ति का हक**
- **बाल विवाह से परिरक्षण पाने का हक**
- **अपनी संस्कृति जानने एवं तदनुरूप जीने का हक**
- **उपेक्षाओं से परिरक्षण पाने का हक**
- **मुफ़्त तथा ज़बरदस्त शिक्षा पाने का हक**
- **खेलने तथा पढ़ने का हक**
- **सुरक्षित एवं प्रेमयुक्त परिवार तथा समाज में जीने का हक**

कुछ दायित्व

- **स्कूल एवं सार्वजनिक संस्थाओं का परिरक्षण करना।**
- **स्कूल एवं शैक्षिक प्रक्रियाओं में समय की पाबंदी रखना।**
- **अपने माता-पिता, अध्यापक, स्कूल के अधिकारी तथा मित्रों का आदर करना और उन्हें मानना।**
- **जाति-धर्म-वर्ग-वर्ण की संकीर्णताओं के परे दूसरों का आदर एवं सम्मान करना।**

Contact Address:

Kerala State Commission for Protection of Child Rights

'Sree Ganesh', T. C. 14/2036, Vanross Junction

Kerala University P. O., Thiruvananthapuram - 34, Phone: 0471-2326603

Email: childrights.cpcr@kerala.gov.in, rte.cpcr@kerala.gov.in

Website: www.kescpcr.kerala.gov.in

Child Helpline - 1098, Crime Stopper - 1090, Nirbhaya - 1800 425 1400

Kerala Police Helpline - 0471-3243000/44000/45000

Online R. T. E Monitoring : www.nireekshana.org.in